A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 14 दिसंबर, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 78, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

अपना भोपाल

फोटो-जगदीश कौशल

● फुटबॉलर मेसी के कार्यक्रम में बवाल के बाद बड़ा ऐक्शन, हजारों खर्च करने के बाद भी अपने चहेते खिलाड़ी को नहीं देख पाए

दर्शकों के पैसे लौटाए जाएंगे, आयोजक अरेस्ट

कोलकाता (एजेंसी)। साल्ट लेक स्टेडियम में शनिवार को आयोजित लियोनेल मेस्सी के फुटबॉल कार्यक्रम के मुख्य आयोजक सतद्रु दत्ता को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। आयोजन स्थल पर मची व्यापक अफरा-तफरी के बाद यह कदम उठाया गया। इसके चलते अर्जेंटीना के विश्व कप विजेता कप्तान लियोनेल मेस्सी को मैदान छोड़कर समय से पहले ही लौटना पड़ा। दत्ता को आयोजन के कथित तौर पर कुप्रबंधन के आरोप में कोलकाता हवाई अड्डे से गिरफ्तार कर लिया गया, जहां वह मेस्सी और उनके साथ शामिल अन्य को हैदराबाद जाते समय विदा करने गए थे। पश्चिम बंगाल के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) राजीव कुमार ने दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का आश्वासन

दिया है और कहा है कि मामले की पूरी जांच होगी। उन्होंने यह भी कहा कि दर्शकों को टिकट के पैसे वापस मिलने चाहिए। दरअसल शनिवार को पूरा कोलकाता मेसी के स्वागत में डूबा हुआ था। लेकिन जैसे-जैसे दिन चढ़ा, तस्वीर बदल गई। साल्ट लेक स्टेडियम में मेसी को लेकर भारी अव्यवस्था थी। हजारों रुपये खर्च करके टिकट खरीदने के बावजूद कई प्रशंसक अपने चहेते खिलाड़ी को देख भी नहीं पाए। मेसी भी तय समय से पहले ही मैदान छोड़कर चले गए। इससे मेसी के प्रशंसकों का गुस्सा फूट पड़ा और स्टेडियम रणक्षेत्र बन गया। स्टेडियम में बोतलें फेंकी गईं, कुर्सियां उड़ीं, और फेंसिंग के गेट तोड़कर सैकड़ों लोग मैदान में घुस गए। स्टेडियम में आग भी लग गई। पुलिस ने लाठीचार्ज किया, लेकिन हालात काबू में नहीं आए। सुरक्षाकर्मी भी बेबस नजर आए।

पुलिस कार्रवाई जारी, ममता ने मेस्सी से माफी मांगी

जावेद शमीम ने बताया कि एफआईआर की प्रक्रिया चल रही है। आयोजक को हिरासत में लिया गया है। इसके बाद जो कानूनी कार्रवाई होगी, वह की जाएगी। उन्होंने आगे कहा कि कौन दोषी है। यह जांच के बाद ही पता चलेगा। इसमें कुछ समय लगेगा। जिन मेसी प्रशंसकों के साथ धोखा हुआ है और जो गुस्से में हैं, उनकी बातों का ध्यान रखा जा रहा है। उधर, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को कोलकाता में फुटबॉलर लियोनेल मेस्सी के कार्यक्रम में हुए कुप्रबंधन पर हैरानी जताते हुए इसकी जांच के लिए एक उच्च स्तरीय समिति के गठन की घोषणा की। ममता ने कहा कि वह मेस्सी के कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए सॉल्टलेक स्टेडियम जा रही थीं, जहां हजारों प्रशंसक खिलाड़ी की एक झलक पाने के लिए इकट्ठा हुए थे।

सुप्रभात

जिस दिन

कोई समस्या सामने न आए
कोई विरोध, कोई पीड़ा, कोई उलझन
तुम्हारे द्वार पर दस्तक न दे
उस दिन ठहरकर सोचना
क्या तुम वास्तव में
सही दिशा में चल रहे हो

समस्याओं का आना
बाधा नहीं संकेत है
कि तुम जाग्रत हो, संघर्षरत हो
और जीवन के सत्य से टकरा रहे हो

जो मार्ग कांटो से रिक्त है
बहुत सहज, बहुत सरल, बहुत शांत
वह कदाचित्
किसी भी लक्ष्य की और नहीं जाता

सही रास्ते
चुनौतियों से अटे होते हैं
क्योंकि वे
तुम्हे बदलते है, तोड़ते है
और फिर नए रूप में गढ़ते हैं

प्रश्नों से मत भागो
पीड़ा से मत घबराओ
क्योंकि ये सब साक्षी हैं
कि तुम्हारा रास्ता
जीवन के केंद्र की और बढ़ रहा है

जिस दिन
हर चीज सरल लगने लगे
हर काम बिना संघर्ष के हो जाए
उस दिन रुक जाना
और स्वम् से पूछना
क्या मैं अपने भीतर की उचाई से
दूर जा रहा हूँ

समस्या का होना
यात्रा का प्रमाण है
और यात्रा का ना होना
कभी कभी भटकाव का संकेत।

उप्र भाजपा के नए 'चौधरी' होंगे पंकज

योगी प्रस्तावक रहे, निर्विरोध चुना जाना तय

7 बार से महाराजगंज से सांसद, केंद्र में मंत्री

कोलकाता (एजेंसी)। केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी यूपी भाजपा के नए अध्यक्ष होंगे। उन्होंने राजधानी लखनऊ स्थित

भाजपा कार्यालय में आज अपना नामांकन दाखिल किया। चूंकि, नामांकन दाखिल करने की समय-सीमा दोपहर 3 बजे तक थी और इस दौरान किसी और ने नामांकन दाखिल नहीं किया। इसलिए अब मोदी-शाह के करीबी चौधरी का अध्यक्ष पद पर निर्विरोध चुना जाना तय हो गया है। सीएम योगी, डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक समेत 10 नेताओं ने चौधरी के नाम का प्रस्ताव रखा। अब रविवार को लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी में केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल नए अध्यक्ष के नाम का ऐलान करेंगे। गोयल के अलावा विनोद तावड़े भी प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव के लिए शनिवार को ही दिल्ली से लखनऊ पहुंचे थे। इससे पहले यूपी भाजपा के नए बॉस पर सस्पेंस के बीच मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने बिना नाम लिए बड़ा खुलासा कर दिया था।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह को पाकिस्तान से खतरा

● गृह मंत्रालय ने सुरक्षा बढ़ाई, भोपाल-दिल्ली आवास के सामने एक्स्ट्रा बैरिकेडिंग

भोपाल (एजेंसी)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज चौहान की सुरक्षा बढ़ाई गई है। केंद्रीय गृह मंत्रालय को मिले इनपुट के बाद शुक्रवार देर रात भोपाल और दिल्ली-दोनों जगह उनकी सुरक्षा व्यवस्था को और कड़ा किया गया। भोपाल में 74 बंगला स्थित बी-8 आवास के चारों तरफ पुलिस ने अतिरिक्त बैरिकेडिंग की। वहीं दिल्ली स्थित सरकारी आवास पर भी सुरक्षा बढ़ाई गई है। शिवराज पर पाकिस्तान के की खुफिया एजेंसी आईएसआई की ओर से दिलचस्पी दिखाने की जानकारी मिली है। सुरक्षा बढ़ाने को लेकर जारी गृह मंत्रालय के पत्र के मुताबिक केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के बारे में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई ने जानकारी हासिल करने में दिलचस्पी दिखाई है।

पीएम ई-बस सेवा योजनांतर्गत अत्याधुनिक ई-बस डिपो का हुआ भूमिपूजन

विरासत और विकास का श्रेष्ठ उदाहरण बनेगा भोपाल क्षेत्र : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आज का दिन अद्भुत संयोग का साक्षी बन रहा है। राज्य सरकार के विकास और सेवा को समर्पित दो वर्ष पूर्ण हो रहे हैं और भोपाल की धरती पर भी इतिहास लिखा जा रहा है। हमारा भोपाल विरासत और विकास की दिशा में एक ओर कदम आगे बढ़ा रहा है। एक तरफ भोपाल में भव्य विक्रमादित्य द्वार का भूमिपूजन कर हम प्रदेश की विरासत संजोने का प्रयास कर रहे हैं। वहीं शहर को स्वच्छ, सुलभ और प्रदूषण रहित परिवहन सेवा देने के लिए पीएम ई-बस सेवा योजनांतर्गत

● मुख्यमंत्री ने भोपाल-इंदौर मार्ग पर विक्रमादित्य स्वागत द्वार का किया भूमि-पूजन

● ग्राम फंदा का नाम हरिहर नगर करने भेजा जाएगा प्रस्ताव

अत्याधुनिक ई-बस डिपो का भूमिपूजन सम्पन्न हो रहा है। राज्य सरकर के इन प्रयासों से भोपाल क्षेत्र विरासत और विकास के श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में विकसित होगा। मध्यप्रदेश के गौरवशाली अतीत और समृद्ध संस्कृति को अभिव्यक्त करते राजधानी भोपाल में 9 स्वागत द्वार बनाए जा रहे हैं। भोपाल में परमार वंश के कुलदीपक राजा भोज, सम्राट विक्रमादित्य, श्रीराम, श्रीकृष्ण के नाम पर भी भव्य स्वागत द्वार बनेंगे। प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक शहरी विकास से जोड़ा गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश के विकास और सेवा के सफलतम 2 वर्ष पूर्ण होने पर शनिवार को भोपाल-सीहोर मार्ग पर हुजूर विधानसभा क्षेत्र के फंदा स्थित महाराणा प्रताप शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम स्थल पर सर्वप्रथम महाराणा प्रताप की

प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की और सम्राट विक्रमादित्य स्वागत द्वार एवं भोपाल में पीएम ई-बस सेवा योजना के अंतर्गत अत्याधुनिक ई-बस डिपो का भूमि-पूजन किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव का लाड़ली बहनों एवं विभिन्न योजना के हितग्राहियों ने आत्मीय स्वागत किया। फंदा में आयोजित कार्यक्रम में पहुंच कर महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत मिट्टी निकालकर बड़े तालाब को गहरा किया जाएगा, इससे खेतों में पानी भरने की समस्या का समाधान होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि क्षेत्रीय मांग पर ग्राम फंदा का नाम बदलकर हरिहर नगर करने संबंधी प्रस्ताव पर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हुजूर विधानसभा क्षेत्र के ग्राम तूमड़ा में शाला भवन के लिए 5 करोड़ रुपए देने और ग्राम फंदा में कॉलेज भवन निर्माण की भी घोषणा की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने का कि भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण से देश की पहचान है। उनसे हम जीवन में रिश्तों की महत्ता को समझ सकते हैं। मध्यप्रदेश के साथ कई इतिहास जुड़े हैं। वीर विक्रमादित्य दुनिया की किसी ताकत के आगे नहीं झुके। उनकी वीरता, गंभीरता, दानशीलता, न्यायप्रियता सर्वविदित है। उनके जीवन में जनता ही भगवान थी। उनकी प्रभावशीलता के परिणामस्वरूप ही अनेक राजाओं ने विक्रमादित्य उपाधि ग्रहण की। सम्राट विक्रमादित्य द्वारा स्थापित सुशासन, न्यास और सुरक्षा की व्यवस्था आज भी श्रेष्ठ शासन व्यवस्था के लिए अनुकरणीय है। राज्य शासन इन श्रेष्ठ सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए विकास, सेवा और जनकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हैं। सम्राट विक्रमादित्य के कार्यकाल में अयोध्या में सरयु नदी के किनारे भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर बना था, जिसे बाबर ने ध्वस्त किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भगवान श्रीराम की जन्म स्थली पर भव्य मंदिर निर्माण कराया है। इसके लिए 550 वर्ष तक कारसेवकों ने संघर्ष किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश की समृद्ध धार्मिक, सांस्कृतिक धरोहर का उल्लेख करते हुए कहा कि राजा भोज के शासनकाल में निर्मित भोपाल का बड़ा तालाब आज भी आदर्श तकनीक का उदाहरण बना हुआ है। भगवान श्रीराम ने अपने 14 साल के वनवास के 11 साल चित्रकूट की पावन धरा पर निकाले। तुलसीदास जी ने यहीं पर रामचरित मानस की रचना की। भगवान श्रीकृष्ण ने उज्जैन में शिक्षा ग्रहण करने के बाद महाभारत के युद्ध में गीता के संदेश के माध्यम से अपने आचार्य से मिला ज्ञान समाज को लौटा दिया।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25°c न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 14 दिसंबर 2025

"जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।"
चाणक्य नीति

इंडिगो की मोनोपॉली कैसे बनी, इसकी जांच होगी

● ताकत के गलत इस्तेमाल का लगा आरोप, सरकार हो गई ऐक्टिव

नई दिल्ली (एजेंसी)। एविएशन सेक्टर में इंडिगो एयरलाइन की मोनोपॉली (एकतरफा दबदबा) अब जांच के दायरे में आ गई है। देश में निष्पक्ष कारोबार पर नजर रखने वाली संस्था कॉम्पिटिशन कमीशन ऑफ इंडिया जांच कर रही है कि क्या देश की सबसे बड़ी एयरलाइन ने मोनोपॉली बनाए रखने के लिए प्रतिस्पर्धा के नियमों का उल्लंघन किया है। इंडिगो संकट

कॉम्पिटिशन एक्ट की धारा 4 का खुला उल्लंघन माना जा रहा है। इसके मुताबिक कोई कंपनी अपनी धाक के बल पर मनमानी कीमत नहीं वसूल सकती और सेवाओं को मनमाने तरीके से संचालित कर कस्टमर्स को ब्लैकमेल नहीं कर सकती। कॉम्पिटिशन कमीशन अंदरूनी तौर पर इंडिगो की मोनोपॉली वाली स्थिति, खास रूट्स पर दबदबे और गलत इस्तेमाल जैसे कई पहलुओं पर छानबीन कर रहा है।

आलंद सीट वोट चोरी मामले में 22000 पन्नों की चार्जशीट

कर्नाटक के पूर्व बीजेपी एमएलए पर कॉल सेंटर बनाकर वोट डिलीट करने का आरोप

बेंगलुरु (एजेंसी)। एसआईटी ने आलंद वोट चोरी मामले में एडीशनल चीफ मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट कोर्ट में शनिवार को 22 हजार पन्नों की चार्जशीट दाखिल की है। जांच में पूर्व बीजेपी विधायक सुभाष गुटटेदार और उनके बेटे हर्षानंद को मुख्य आरोपी बनाया गया है। उन पर आरोप है कि 2023 विधानसभा चुनाव से पहले 5,994 वोटरों के नाम वोटर लिस्ट से हटाने की कोशिश हुई। इसके लिए कलबुर्गी में एक कॉल सेंटर नेटवर्क बनाया गया, जहां से फर्जी डिलीशन एप्लिकेशन डाली गई। इसी साल 18 सितंबर को राहुल गांधी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके 2023 कर्नाटक विधानसभा चुनावों के दौरान आलंद विधानसभा क्षेत्र में वोट चोरी के आरोप लगाए थे। उन्होंने कहा था कि चुनाव आयोग जानबूझकर कांग्रेस के वोटों को निशाना बना रहा है और उनके नाम डिलीट कर रहा है। राहुल ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में कर्नाटक के आलंद विधानसभा क्षेत्र का उदाहरण दिया था। उन्होंने कहा था 2023 के चुनाव में किसी ने 6,018 वोट डिलीट करने की कोशिश की।

अवामी लीग को चुनाव से बाहर रखना पागलपन है

● मोहम्मद यूनुस पर भड़कीं शेख हसीना, बताया बांग्लादेश के लिए बड़ा खतरा

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री और निर्वासन में रह रही अवामी लीग नेता शेख हसीना ने मोहम्मद यूनुस सरकार पर तीखा हमला बोला है। हसीना ने देश के मौजूदा हालात को गहरा संकट बताया और इसे लोकतंत्र के लिए खतरा कहा। उन्होंने कहा कि यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार में देश के अंदर कानून-व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रह गई है।

हसीना ने अपने खिलाफ आरोपों से साफ इनकार किया और खुद व पार्टी के खिलाफ कानूनी कार्रवाईयों को राजनीति से प्रेरित बताया। अवामी लीग ने पार्टी को चुनाव से बाहर रखने को अवैध बताया और प्रतिबंध हटाने की मांग की। एक न्यूज चैनल के साथ इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि 1971 से अब तक हमें लोगों ने 9 बार चुना है। हमें बाहर रखना पागलपन है। चाहे सरकार में हों या विपक्ष में, इतनी बड़ी पार्टी को राष्ट्रीय राजनीतिक बातचीत का हिस्सा होना चाहिए।

● तिरुवनंतपुरम के 101 वार्डों में से 50 पर जीत, 45 साल से लेफ्ट का कब्जा था

शशि थरूर जहां से सांसद, वहां एनडीए निकाय चुनाव जीता

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल के निकाय चुनाव एनडीए को बड़ी कामयाबी मिली है। तिरुवनंतपुरम नगर निगम के 101 वार्डों में से 50 वार्डों पर जीत दर्ज की है। पिछले 45 साल से यहां वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) का कब्जा है। एलडीएफ 29 और कांग्रेस गठबंधन को 19 वार्डों में विजयी मिली। 2020 में तिरुवनंतपुरम के स्थानीय निकाय चुनावों में एलडीएफ ने 52 वार्ड जीते थे। भाजपा-नेतृत्व वाले एनडीए को 33 वार्ड मिले थे और यूडीएफ ने 10 वार्डों में जीत हासिल की थी। तिरुवनंतपुरम कांग्रेस सांसद शशि थरूर का गढ़ माना जाता है। केरल के 1,199 स्थानीय निकायों के लिए सुबह 8 बजे मतगणना जारी है। केरल में स्थानीय निकाय के चुनाव दो फेज 9 और 11 दिसंबर को वोटिंग हुई थी। चुने गए पंचायत सदस्यों और नगर पालिका पार्षदों, कॉरपोरेशन पार्षदों का शपथ ग्रहण 21 दिसंबर को होगा। पीएम मोदी ने भाजपा कार्यकर्ताओं का आभार जताया और तारीफ की।

पीएम मोदी ने भाजपा कार्यकर्ताओं का आभार जताया

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, तिरुवनंतपुरम नगर निगम में शानदार जीत पर मेहनती भाजपा कार्यकर्ताओं को हार्दिक धन्यवाद। आज का दिन केरल में कार्यकर्ताओं की पीढ़ियों के कार्य और संघर्षों को याद करने का है, जिन्होंने जमीनी स्तर पर काम किया। हमारे कार्यकर्ता ही हमारी ताकत हैं और हमें उन पर गर्व है। भाजपा उम्मीदवार आर. श्रीलेखा ने कहा- जब से मेरी उम्मीदवारी की घोषणा हुई है, एलडीएफ और कांग्रेस ने उम्मीद से ज्यादा मेरी आलोचना की है। मुझे खुशी है कि मेरे वार्ड के लोगों ने उन सभी बातों को नजरअंदाज किया और मेरा साथ दिया। जेपी नड्डा ने एक्स पर लिखा, लोकल बॉडी चुनावों में बीजेपी और एनडीए के साथ खड़े रहने के लिए केरल के लोगों का दिल से धन्यवाद। यह नतीजा हमारी बढ़ती जमीनी मौजूदगी को दिखाता है। पूरे राज्य में शासन में बदलाव की मजबूत इच्छा का संकेत देता है। नितिन गडकरी ने लिखा, केरल के लोगों का मैं दिल से शुक्रिया अदा करता हूं जिन्होंने बीजेपी और एनडीए उम्मीदवारों पर भरोसा जताया और म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन्स में एक

जंग भाषणों से नहीं ऐक्शन से जीती जाती है

● सीडीएस बोले-खाली शब्दों और प्रतीकात्मक दावों से ताकत साबित नहीं होती

कहा-पाकिस्तान हमेशा जीत के झूठे दावे करता रहा है, हमें हमेशा सतर्क रहना होगा

हैदराबाद (एजेंसी)। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने शनिवार को कहा कि युद्ध केवल बयानबाजी से नहीं, बल्कि स्पष्ट लक्ष्य और उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई से जीते जाते हैं। सीडीएस तेलंगाना के डुंडीगल स्थित एयर फोर्स अकादमी में ऑटम टर्म दिसंबर 2025 की कंबाइंड ग्रेजुएशन परेड में शामिल हुए थे। इस दौरान उन्होंने कहा-खाली शब्दों और प्रतीकात्मक दावों से ताकत साबित नहीं होती। अनुशासन, ठोस योजना और निर्णायक अमल ही किसी देश की असली सैन्य क्षमता दिखाते हैं। उन्होंने बिना नाम लिए पाकिस्तान पर तंज कसते हुए कहा कि हाल के समय में वहां झूठे जीत के दावे और सोशल मीडिया प्रचार देखने को मिले, जबकि जमीनी हकीकत कुछ और रही है। नए अधिकारी ऐसे समय सेवा में आ रहे हैं, जब ऑपरेशन 'सिंदूर' जारी है। मौजूदा सुरक्षा माहौल में हर समय सतर्कता, फुर्ती और तैयार रहना जरूरी है। सैन्य सेवा केवल संकट के क्षणों तक सीमित नहीं होती, बल्कि

लगातार तैयारी ही सफलता की कुंजी है। सतर्कता, तत्परता और पेशेवर रवैया ही युद्ध के समय ही नहीं, पूरे सेवा काल में सफलता तय करेगा। भारत की मजबूती मजबूत संस्थानों, लोकतांत्रिक स्थिरता और सशस्त्र बलों की पेशेवर क्षमता पर टिकी है। जनरल अनिल चौहान ने 29 नवंबर को नई दिल्ली के सैम मॉनेकशॉ सेंटर में चल रहे चाणक्य डिफेंस डायलॉग में शामिल हुए थे। इस दौरान उन्होंने कहा था कि युद्ध लगातार खुद को बदलता और बनाता रहता है।

जो कॉन्सेप्ट भविष्य के लगते हैं, वे लागू होने से पहले ही पुराने भी हो सकते हैं। यह एक ऐसा रिस्क है जो सेना को उठाना पड़ता है। इसलिए फ्यूचर वॉरफेयर के मुताबिक अंदाजा लगाना, तैयारी करना हमारे अस्तित्व से जुड़ जाता है। इसका दूसरा कोई ऑप्शन नहीं है। जनरल अनिल चौहान ने 25 सितंबर को कहा था कि 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान एयरफोर्स के इस्तेमाल की परमिशन नहीं दी गई थी। अगर ऐसा होता तो चीनी आक्रमण को काफी हद तक कम किया जा सकता था।

75वें जन्मदिन पर रजनीकांत ने तिरुपति मंदिर में लिया आशीर्वाद

● परिवार के साथ पहुंचे थलाइवा, फैन्स का किया खास अभिवादन

चेन्नई (एजेंसी)। साउथ सुपरस्टार रजनीकांत ने 12 दिसंबर को अपना 75वां जन्मदिन मनाया। इसके अगले दिन, शनिवार को वे अपने परिवार के साथ भगवान वेंकटेश्वर का आशीर्वाद लेने तिरुमला तिरुपति मंदिर पहुंचे, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में रजनीकांत अपनी पत्नी लता और बेटियों सौंदर्या व ऐश्वर्या के साथ मंदिर में प्रवेश करते नजर आ रहे हैं। इस दौरान उनके साथ उनके नाती यात्रा राजा भी दिखाई दिए, जो मंदिर परिसर से बाहर निकलते समय सुपरस्टार का सहारा बनते नजर आए। इसके बाद रजनीकांत और उनके परिवार ने मीडिया के सामने तस्वीरों के लिए पोज दिए।

साहित्यकारों को 'कृति सम्मान' प्रदान

भोपाल। बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केंद्र, भोपाल द्वारा दुष्यंत संग्रहालय में संस्था का स्थापना दिवस समारोह गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद् सौरभ प्रकाश ने की।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सौरभ प्रकाश ने कहा कि बाल साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि भावी पीढ़ी के संस्कार निर्माण का सशक्त माध्यम है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. राघवेंद्र शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, बाल अधिकार आयोग ने कहा-बच्चों का भविष्य गढ़ने के लिए बाल साहित्य केंद्रों की स्थापना अत्यंत आवश्यक है। यह समाज की दीर्घकालिक निवेश योजना है।समारोह में बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केंद्र के निदेशक महेश सक्सेना ने संस्था की गतिविधियों को रेखांकित करते हुए अतिथियों का स्वागत किया।

विशेष अतिथि हिंदी लेखिका संघ, मध्यप्रदेश की अध्यक्ष डॉ. साधना गंगराड़े ने कहा बाल साहित्य ऐसा होना चाहिए जो बच्चों को कल्पना के पंख दे, उनकी आँखों में चमक लाए और उनके छोटे-से मन में बड़े विचारों के बीज बोए।

सारस्वत अतिथि श्यामा गुप्ता 'दर्शना' ने अपने वक्तव्य में कहा किबच्चे ही कल का भविष्य हैं, उनके लिए सार्थक और संवेदनशील साहित्य लिखा जाना चाहिए।इस अवसर पर साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'कृति सम्मान' प्रदान किया गया–ये हैंगोकुल सोनी, सीमा हरि शर्मा, मनोज जैन 'मधुर', रानी सुमिता, शेफालिका श्रीवास्तव, शिवकुमार दीवान, वंदना अतुल जोशी, सरोज दवे, कमल चंद्रा,

मधुलिका श्रीवास्तव, निरुपा श्रीमाली, अंजलि खेर, अमित पगारे, रूपाली सक्सेना, मोनिका रूसिया, जय शाह, विद्या श्रीवास्तव एवं डॉ. मीना शुक्ला।

कार्यक्रम में

* 'बाल उड़ान' – वंदना अतुल जोशी
* 'नन्हे परों की उड़ान' – अंजलि खेर
* 'खुशियों की गुल्लक' – कमल चंद्रा
* 'बड़े सवेरे चिड़िया बोली' – सीमा हरि शर्मा
* 'बच्चों तुम्हारे लिए' – विद्या श्रीवास्तव
* 'हम हैं तराशे हीरे' – अनीता सक्सेना तथा
* 'दादू का पिटारा' – गोकुल सोनी की पुस्तक

का विमोचन किया गया।

स्वागत भाषण डॉ. अनीता तिवारी ने तथा सरस्वती वंदना डॉ. नीलू समीर एवं द्वितीय भिमटे ने प्रस्तुत आभार प्रदर्शन जलज गुप्ता ने तथा कार्यक्रम का संचालन मधुलता शर्मा ने किया।

भीषण ठंड से कांप रहे राजस्थान और एमपी

● 37 शहरों में तापमान 10 डिग्री से कम ● यूपी में कोहरा, सड़कों पर 10 मीटर देखना भी मुश्किल

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान में सर्दी के बीच पश्चिमी विक्षोभ ऐक्टिव हुआ है। बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ सहित कई इलाकों में बादल छाए हैं। इससे सर्द हवाएं कमजोर हुई हैं। राज्य के 18 शहरों में शुक्रवार को तापमान 10 डिग्री से कम रिकॉर्ड किया गया। माउंट आबू में पारा 3 डिग्री पहुंच गया। मध्य प्रदेश में कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। राज्य के 19 शहरों में कल रात न्यूनतम तापमान 10 डिग्री से कम रिकॉर्ड हुआ। इंदौर में 5.2 डिग्री तापमान रहा। इतना ही तापमान प्रदेश के इकलौते हिल स्टेशन और सबसे ठंडी जगह कहे जाने वाले पचमढ़ी में भी दर्ज किया गया। यूपी और बिहार में घने कोहरे का असर बढ़ता जा रहा है। यूपी के लखनऊ, गोरखपुर समेत 30 जिलों में सड़कों पर 10 मीटर दूर कुछ भी नहीं दिख रहा है। शनिवार सुबह सुल्तानपुर में पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर कोहरे की वजह से कई गाड़ियां आपस में भिड़ गईं। इससे एक महिला जख्मी हो गई। पहाड़ी राज्यों में बर्फबारी की आशंका है। मौसम विभाग के अनुसार, उत्तराखंड के उत्तरकाशी, चमोली और पिथौरागढ़ में रविवार को बारिश के साथ हल्की बर्फबारी हो सकती है। हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति, चंबा और कुल्लू जिलों में बर्फबारी की संभावना है। मध्य प्रदेश में इस बार सर्दी रिकॉर्ड तोड़ रही है। इंदौर में पिछले 10 साल के दौरान सबसे ज्यादा सर्दी पड़ रही है।

टी-20 वर्ल्डकप क्रिकेट (ब्लाइंड) जीतने वाली भारतीय टीम में शामिल रहीं प्रदेश की तीन खिलाड़ी

प्रदेश की तीन महिला क्रिकेट खिलाड़ियों को दी जाएगी 25-25 लाख रूपए की प्रोत्साहन राशि :मुख्यमंत्री

तीन कोच को दिए जाएंगे एक-एक लाख रूपए

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से शनिवार को ब्लाइंड विमिंस टी-20 क्रिकेट वर्ल्ड कप 2025 का फाइनल जीतने वाली भारतीय टीम में शामिल मध्यप्रदेश की तीन महिला खिलाड़ियों ने मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में भेंट की। खिलाड़ियों में सुश्री सुनीता सराठे, सुश्री सुषमा पटेल और सुश्री दुर्गा येवले शामिल हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस उपलब्धि के लिए तीनों खिलाड़ियों को प्रोत्साहन स्वरूप 25-25 लाख रूपए प्रदान किए जाएंगे, जिसमें से 10-10 लाख रूपए नगद और 15-15 लाख रूपए फिक्स्ड डिपॉजिट के रूप में होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने तीनों खिलाड़ियों और तीनों कोच का ट्राफी और अंगवस्त्रम भेंट कर

सम्मान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश का नाम रौशन करने वाली तीनों खिलाड़ियों की आगामी पढ़ाई और कोचिंग आदि की व्यवस्था भी राज्य सरकार द्वारा की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महिला खिलाड़ियों के कोच सर्वश्री सोनु गोलकर, ओमप्रकाश पाल और दीपक पाहड़े को एक-एक लाख रूपए की प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की।

उल्लेखनीय है कि भारतीय महिला ब्लाइंड क्रिकेट टीम ने महिला टी-20 वर्ल्ड कप क्रिकेट 2025 के फाइनल मैच में नेपाल को हराकर ऐतिहासिक जीत दर्ज की थी। महिला ब्लाइंड क्रिकेट टीम में मध्यप्रदेश की उपरोक्त तीन प्रतिभावान खिलाड़ी शामिल थीं। इनमें ऑलराउंडर केटेगरी में खेलने वाली सुश्री सुनीता सराठे नर्मदापुरम, सुश्री सुषमा पटेल दमोह और बेट्समेन तथा विकेटकीपर के रूप में खेलने वाली सुश्री दुर्गा येवले बैतूल से हैं।

नवादा में मॉब लिंचिंग, युवक की पीट-पीटकर कर दी हत्या

● मौत से पहले बोला-पैंट खोलकर देखा मुस्लिम है

प्लायर से उंगलियां तोड़ीं, सीने पर चढ़कर पीटने लगे

नवादा (एजेंसी)। नवादा में 5 दिसंबर को मॉब लिंचिंग में घायल युवक की शुक्रवार देर रात इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतक की पहचान नालंदा जिले के निवासी मोहम्मद अतहर हुसैन (40) के रूप में हुई है। मरने से पहले मोहम्मद अतहर हुसैन ने 7 दिसंबर को कैमरे पर अपना बयान दर्ज कराया था, जिसमें उन्होंने पूरी वारदात डिटेल में बताई। मोहम्मद अतहर हुसैन ने बताया कि 4-5 लोगों ने घेरकर उनके साथ मारपीट की। उन्हें एक कमरे में ले गए, फिर पैंट उतारकर चेक किया कि वो

मुस्लिम हैं या नहीं। उसके बाद गर्म रॉड से मारा, स्टील के रॉड से मारकर सिर फोड़ दिया। लाठी-डंडे, ईंट से पीटा गया। किसी ने उंगलियां तोड़ीं, तो कोई सीने पर चढ़कर गला दबाने लगा। इतना ही नहीं प्लायर से उनके कान काटे गए। पीट-पीटकर उन्हें अधमरा कर दिया।

● 20 सालों से घूम-घूम कर कपड़े बेचता था- 7 दिसंबर को कैमरे पर दिए अपने बयान में मोहम्मद अतहर हुसैन ने बताया था, मैं बीते 20 सालों से नवादा क्षेत्र में फेरी लगाकर कपड़े बेचता था। 5 दिसंबर को मैं फेरी कर डुमरी गांव से घर लौट रहा था, तभी रोह थाना क्षेत्र के भट्ठापर गांव से लौटते वक्त नशे में धुत 6-7 युवकों ने मुझे घेर लिया। युवकों ने पहले मेरा नाम पूछा, नाम सुनते ही जबरन साइकिल से उतारकर 8 हजार रुपए लूट लिए। इसके बाद हाथ-पैर बांधकर एक कमरे में बंद कर दिया।

कादरी ने जमानत आवेदन में भाजपा में नहीं जाने पर फंसाने का आरोप लगाया

लव जिहाद फंडिंग के आरोप में कैद, जमानत आवेदन खारिज

इंदौर। नगर निगम के कांग्रेस पार्षद पद से हटाए गए अनवर कादरी ने अपनी जमानत के लिए पेश आवेदन में चौंकाने वाला दावा किया। प्रस्तुत जमानत आवेदन में कहा है कि वह गत करीब 15-16 साल से पार्षद के पद पर रहा है। कादरी पर पकड़े गए दो युवकों ने लव जिहाद के लिए फंडिंग करने का आरोप लगाया था।जेल में रहने से सामाजिक प्रतिष्ठा धूमिल हो रही है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार होकर उनके द्वारा मुझे अपने संगठन में आने के लिए दबाव बनाया जा रहा था। जब मैंने भाजपा की सदस्यता लेने से इनकार कर दिया तो मुझे इस झूठे केस में फंसा दिया गया है। केस में मेरा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई संबंध नहीं है। शासन की ओर से जमानत आवेदन का विरोध किया गया। सभी के तर्क सुनने के बाद अपर सत्र न्यायाधीश यतेश सिसोदिया की कोर्ट ने जमानत याचिका खारिज कर दी।नगर निगम के वार्ड 58 से पार्षद अनवर कादरी को गत 5 नवंबर को ही पार्षद पद से हटा दिया गया है। संभागायुक्त डॉ. सुदाम खाड़े ने इस संबंध में आदेश जारी कर कादरी को

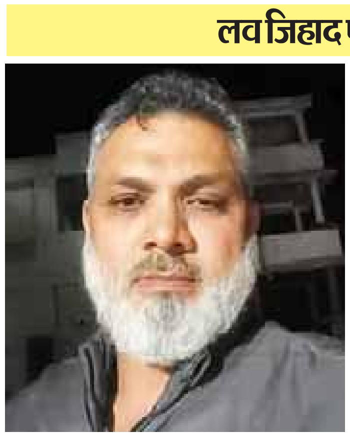

आगामी पांच साल तक किसी भी चुनाव लड़ने के लिए भी अयोग्य घोषित कर दिया था। उसके विरुद्ध एक दर्जन से अधिक अपराध दर्ज हैं। कादरी के खिलाफ गंभीर आपराधिक आरोप सामने आने के बाद महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने संभागायुक्त से कादरी को पद से हटाने की अनुशंसा की थी। नगर निगम द्वारा आयोजित विशेष सम्मेलन में कादरी को पद से हटाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया था।

कादरी पर लगे आरोप

अनवर कादरी पर दो युवकों ने गंभीर आरोप लगाए थे। युवकों ने हैरान करने वाला खुलासा किया था, कि कादरी ने उन्हें पैसे दिए थे ताकि वे हिंदू महिलाओं को अपने जाल में फंसा कर धर्म परिवर्तन और वेश्यावृत्ति की ओर धकेलें। वीडियो वायरल होते ही हड़कंप मच गया था। पुलिस ने फौरन मामला दर्ज कर लिया था। इंदौर के बाणगंगा थाना क्षेत्र में कुछ माह पहले दो युवकों पर दो युवतियों के साथ रेप और धर्म परिवर्तन के लिए दबाव बनाने का मामला दर्ज किया था। जांच के दौरान सामने आए वीडियो में दोनों आरोपियों ने कांग्रेस पार्षद अनवर कादरी का नाम लिया। जिस पर उन्हें लड़कियों को प्रेमजाल में फंसाने और निकाह के लिए पैसों का लालच देने का आरोप है। पुलिस ने मामले में मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था। कादरी तब फरार हो गया थे। पुलिस ने उन्हें पकड़ने के लिए इंदौर, दिल्ली समेत कई शहरों में दबिश दी। उनकी गिरफ्तारी पर 40 हजार रुपए का इनाम रखा था। इसी दौरान उनकी बेटी आयशा को भी गिरफ्तार किया गया, क्योंकि उस पर पिता को छिपाने में मदद करने का आरोप लगा था। करीब तीन महीने फरार रहने के बाद 29 अगस्त को कादरी ने जिला अदालत में सरेंडर कर दिया था।

गंभीर धाराओं प्रकरण दर्ज

कादरी के खिलाफ विभिन्न धाराएं धारा–323, 506, 392, 324, 25 आर्म्स एक्ट, 302, 307, 452, 341, 427, 64, 64(2)(एम), धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम सहित कई अन्य आपराधिक धाराओं में गंभीर प्रकरण पंजीबद्ध हैं। इन धाराओं के अलावा भी पार्षद अनवर कादरी पर अनेक धाराओं में प्रकरण पंजीबद्ध किए गए हैं।

अन्तर्राज्यीय कुख्यात नकबजन 'तलवार सिंह' इंदौर में गिरफ्तार

100 से अधिक गंभीर अपराधों में दो राज्यों में वांछित

इंदौर। पलासिया थाना पुलिस ने अंतर्राज्यीय कुख्यात नकबजन अब्दुल रशीद उर्फ तलवार सिंह को गिरफ्तार कर सोने-चांदी के लाखों के आभूषण और चोरी की स्प्लेंडर बाइक सहित करीब 7.5 लाख रुपए का माल बरामद किया। आरोपी मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों में 100 से अधिक गंभीर अपराधों में वांछित है। थाना प्रभारी सुरेंद्र सिंह रघुवंशी के नेतृत्व में गठित 4 टीमों ने चोरी की वारदातों के 800 से अधिक सीसीटीवी फुटेज खंगाले।

मुखबिरों की मदद से संदिग्ध आरोपी की पहचान हुई और उसे घेराबंदी कर गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में उसने बताया कि वह वोटर कार्ड के लिए एसआईआर फॉर्म भरने इंदौर आया था। तिलक नगर थाना क्षेत्र से उसने एक स्पेलेन्डर दुपहिया वाहन चुराया और 3 दिसंबर को उसी दुपहिया वाहन से गीता नगर क्षेत्र में एक सुनसान फ्लैट में ताले के नकूचे को टॉमी की मदद से तोडकर फ्लैट के अंदर से अलमारी में रखे सोने चांदी के जेवर चुरा लिए। आरोपी नशे करने का भी आदी है और सूने घरों में चोरी करने में कुख्यात है।आरोपी से विस्तृत पूछताछ करने पर आरोपी के विरूध्द थाना पलासिया क्षेत्र में पूर्व के 4 अपराध पंजीबद्ध होना पाया। शहर के अन्य थाने के दर्जनों अपराध घटित करना पाया गया

है। आरोपी का विस्तृत आपराधिक रिकार्ड पता करते अभी तक आरोपी पर करीब 60 से ज्यादा अपराध मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र राज्य के लगभग सभी जिलों में होना पाया गया है एवं शेष 40 से भी अधिक आपराधिक रिकॉर्ड की भी जानकारी ली जा रही है।

ऐसे पड़ा 'तलवार सिंह' नाम– अब्दुल रशीद बचपन से ही इंदौर में पला-बढ़ा और 19 वर्ष की आयु में चोरी की दुनिया में उतर गया। बाद में महाराष्ट्र के अकोला जिले में जाकर निकाह किया और वहीं अपनी खतरनाक छवि बनाता रहा। बताया जाता है कि अकोला के वर्धा क्षेत्र में उसने एक व्यक्ति की तलवार से गर्दन काटकर हत्या कर दी थी और हत्या के बाद खुद ही गर्दन लेकर थाने में पेश हो गया था। इस भयावह वारदात के चलते उसे 'तलवारसिंह' नाम मिला और वह महाराष्ट्र में दहशत का पर्याय बन गया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। इस कार्रवाई में थाना पलासिया की टीम और साइबर सेल के अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

50 हजार में 2 लाख के नकली नोट खरीदे, पर बाजार में चला नहीं सके

क्राइम ब्रांच ने इस कोशिश में 4 युवकों को गिरफ्तार किया

इंदौर। क्राइम ब्रांच ने इंस्टाग्राम पर रील देखकर नकली नोट मंगवाने वाले चार युवकों को गिरफ्तार किया। चारों आरोपी दोस्त हैं और वे नकली नोट खपाने का बड़ा मार्केट बनाने की फिराक में थे। आरोपियों ने क्राइम ब्रांच को बताया कि नोट भेजने वाले ने खुद को गुजरात का बताया था। क्राइम ब्रांच उस आरोपी की तलाश कर रही है। क्राइम ब्रांच के एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया ने बताया कि मुताबिक आरोपियों ने दो लाख रुपए के नकली नोटों की कीमत के रूप में 50 हजार रुपए चुकाए थे। वे इंस्टाग्राम पर रील देखकर शॉर्टकट में अमीर बनना चाहते थे। उनके कब्जे से दो लाख रुपए के नकली नोट, दो बाइक जब्त की गई है। दंडोतिया ने बताया कि गुरुवार रात को हमें सूचना मिली थी कि सदर बाजार क्षेत्र स्थित गुटकेश्वर महादेव मंदिर के नजदीक दो चार युवकों के पास नकली नोट हैं। सूचना मिलते ही क्राइम ब्रांच ने उन्हें घेराबंदी कर पकड़ा। बैग की तलाशी लेने पर 500 रुपए के 400 नकली नोट बरामद किए गए।

पूछताछ में चार आरोपियों ऋषिकेश तोंडे, वंश कैथवास, रितेश नागर और अकुंश यादव निवासी इंदौर को गिरफ्तार किया है। ये चारों दोस्त हैं। इन्होंने पूछताछ में बताया कि इंस्टाग्राम पर हमने एक युवक का वीडियो देखा था। हमने फोन नंबर लेकर बात की तो उसने खुद को गुजरात का होना बताया। चारों ने ज्यादा पैसा कमाने के चक्कर में 50 हजार रुपए देकर पांच सौ रुपए के दो लाख रुपए के नोट मंगा लिए। इसके बाद ही वे धरे गए।

इंदौर वन मंडल में शाकाहारी वन्यजीव एवं आवास सर्वेक्षण सफलता से पूरा

102 बीट में एक साथ वैज्ञानिक सर्वे, मांसाहारी वन्यजीवों के संकेत

इंदौर। ऑल इंडिया टाइगर एस्टीमेशन (एआईटीई) 2026 की तैयारी को गति देते हुए इंदौर वन मंडल में आयोजित दो दिवसीय डेमोंस्ट्रेशन वर्कशॉप का दूसरा दिन शुक्रवार को सफलतापूर्वक पूरा किया। पहले दिन मांसाहारी वन्यजीव संकेत सर्वे के बाद 12 दिसंबर को शाकाहारी जीवों और उनके आवास का विस्तृत वैज्ञानिक आकलन किया गया। यह सर्वे इंदौर, चोरल, महू और मानपुर के चार प्रादेशिक परिक्षेत्रों के कुल 102 बीट तथा रालामंडल अभयारण्य में एक साथ हुआ। एआईटीई प्रोटोकॉल के अनुसार चीतल, सांभर, नीलगाय, ब्लैकबक, खरहा, लंगूर और मोर जैसे शाकाहारी जीव किसी क्षेत्र में मांसाहारी प्रजातियों की उपस्थिति के प्रमुख संकेतक माने जाते हैं। सर्वे टीमों ने ताज़े खुरों के निशान, मल-पेलिट विश्लेषण, झाड़ियों पर ब्राउजिंग प्रेशर, चराई क्षेत्र, वनस्पति की स्थिति जैसे कई वैज्ञानिक मानकों का मूल्यांकन निर्धारित ट्रांसेक्ट मार्गों पर प्रातः काल में किया।

टीमों ने वनस्पति घनत्व, प्रजातिगत विविधता, चराई दबाव,अवैध लकड़ी कटाई के संकेत, मवेशियों की आवाजाही और मानवजनित गतिविधियों का भी विस्तृत रिकॉर्ड तैयार किया। इन तत्वों का वन्यजीव वितरण और जंगल के स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इंदौर वनमंडलाधिकारी प्रदीप मिश्रा का कहना है कि इस अभ्यास से फील्ड स्टाफ की तकनीकी क्षमता जैसे डंग काउंट, लाइन ट्रांसेक्ट तकनीक और आवास वर्गीकरण और अधिक मजबूत हुई है। ऐसे वैज्ञानिक प्रशिक्षण न केवल टीमों में कार्य की एकरूपता लाते हैं, बल्कि एआईटीई 2026 के लिए उच्च गुणवत्ता वाले, विश्वसनीय डेटा संग्रह में भी अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

बकायेदारों पर नगर निगम की कड़ी कार्रवाई, होर्डिंग पर चस्पा 60 नाम

इन बकायेदारों पर 22 से 25 लाख रुपए का टैक्स बकाया

इंदौर। नगर निगम ने टैक्स नहीं चुकाने वालों के खिलाफ सख्ती दिखाते हुए शुक्रवार को बड़ा कदम उठाया। निगम आयुक्त दिलीप कुमार यादव के निर्देश पर जोन क्रमांक-3 के वार्ड 56, 57 और 58 के बड़े बकायेदारों के नाम सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किए गए। राजवाड़ा क्षेत्र में लगाए गए विशाल होर्डिंग पर जब इन बकायेदारों की सूची चस्पा की गई, तो इसे देखकर आम नागरिक भी हैरान रह गए। जानकारी के अनुसार सूची में 60 से अधिक ऐसे लोगों के नाम शामिल हैं, जिन्होंने पिछले पांच वर्षों से नगर निगम का टैक्स जमा नहीं किया। कई बार नोटिस देने और चेतावनी

जारी करने के बावजूद इन बकायेदारों ने कोई कदम नहीं उठाया। अधिकारियों के मुताबिक, प्रत्येक पर औसत 22 से 25 लाख रुपये तक का बकाया है, जिससे निगम को भारी राजस्व हानि हो रही है। नगर निगम ने स्पष्ट कर दिया कि आगामी लोक अदालत में यदि इन बकायेदारों ने अपने प्रकरणों का निपटारा नहीं किया, तो उनके खिलाफ जब्ती-कुर्की की कार्रवाई शुरू कर दी जाएगी। निगम प्रशासन का मानना है कि इस पहल से वर्षों से अटके कर राजस्व की वसूली होगी और शहर के विकास कार्यों को नई गति मिलेगी। एआरओ अनिल निकम ने कहा कि कड़े कदम से बकायेदारों में जागरूकता बढ़ेगी और समय पर टैक्स जमा करने की प्रवृत्ति भी मजबूत होगी।

पुलिस परिवारों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

इंदौर। पुलिस कर्मियों और उनके परिजनों के बेहतर स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इंदौर पुलिस द्वारा सराहनीय पहल की गई। पुलिस आयुक्त संतोष कुमार सिंह के निर्देशन में शनिवार को डीआरपी लाइन में निःशुल्क हेल्थ चेकअप कैम्प का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी एवं उनके परिवारजन शामिल हुए। यह शिविर अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (अपराध/मुख्यालय) आरके सिंह एवं पुलिस उपायुक्त (मुख्यालय) प्रकाश परिहार के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ। कैम्प में बॉम्बे हॉस्पिटल एवं अग्रवाल आई हॉस्पिटल के अनुभवी चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। डॉ अभिमन्यु निगम, डॉ अश्विन परचानी, डॉ अग्रवाल सहित विशेषज्ञ टीम द्वारा हृदय रोग, शुगर, ब्लड प्रेशर एवं नेत्र संबंधी जांचें निःशुल्क की गईं। चिकित्सकों ने बढ़ती उम्र में होने वाली सामान्य बीमारियों की जानकारी देते हुए उनसे बचाव के उपाय बताए। साथ ही स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराने की सलाह दी गई। शिविर में सैकड़ों पुलिसकर्मियों व परिजनों ने लाभ लेकर आयोजन की सराहना की।

वकील के साथ मारपीट, कार का कांच फोड़ा, टायर में कील ठोकी

चौकीदार के खिलाफ पुलिस ने एफआईआर दर्ज की

इंदौर। एक चौकीदार ने कार मालिक वकील के साथ कार पार्क करने पर मारपीट की और कार को नुकसान पहुंचाया। बताया गया कि एक बिल्डिंग के पास कार खड़ी कर व्यक्ति थाने में काम से गए। इस पर चौकीदार नाराज हो गया। पुलिस ने चौकीदार के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। पुलिस के मुताबिक, संतोष वास्कले निवासी लोकमान्य नगर की शिकायत पर पुलिस ने राजेश तिवारी, राजेंद्र नगर, एबी रोड के खिलाफ कार के कांच तोड़कर टायर की हवा निकालने के बाद मारपीट करने के मामले में गुरुवार रात एफआईआर दर्ज की है। संतोष वास्कले पेशे से वकील हैं। उन्होंने बताया कि राजेंद्र नगर थाने के सामने चल रही एक सेल के पास कार पार्क की थी। इसके बाद वे थाने में चले गए। रात को वापस जब कार के पास आए तो राजेश टायरों में कीलें ठोक रहा था। उसने तीन टायर पंचर कर दिए। कार का आगे का कांच टूटा हुआ था। जब उससे पूछताछ की तो वह अपशब्द कहने लगा। मारपीट करते हुए धमकाया कि कार यहां क्यों लगाई। यहां वह चौकीदारी करता है और गाड़ियां पार्क करना मना है। बाद में वकील संतोष वास्कले ने सामने थाने से पुलिस को बुलाया। पुलिस ने राजेश तिवारी पर एफआईआर दर्ज की है। वहीं मामले में राजेश को रात में ही हिरासत में लिया गया है।

इंदौर समेत 5 जिलों में मावठा गिरने की आशंका, कई शहरों में पारा गिरा

इंदौर, भोपाल, सीहोर, राजगढ़ और शाजापुर जिलों में येलो अलर्ट

इंदौर। कड़ाके की ठंड का अलर्ट जारी है। इंदौर समेत कई जिलों में पारा 5 डिग्री के आसपास चल रहा है। जिस ठंड से उत्तर-मध्य भारत का यह हिस्सा ठिठुरता था, इस बार वह भोपाल, इंदौर मध्य प्रदेश के पूर्वी जिलों में महसूस की जा रही है। रात होते ही भोपाल के पारे में गिरावट होती है, सर्दी के इस सीजन के 72 दिन पूरे हो चुके है। लेकिन, ग्वालियर चंबल संभाग में वह कड़ाके वाली ठंड अभी तक नहीं आई, जो हर साल दिसंबर में दस्तक देती है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि 25 साल बाद सर्दी का प्राकृतिक ट्रैक बदल गया है। पश्चिमी विक्षोभ कश्मीर से होकर गुजरते हैं, इस बार वे तिब्बत के पठार की ओर शिफ्ट हो गए। उत्तरी हवाएं हिमालय

के ऊपरी हिस्से से निकलकर राजस्थान होते हुए सीधे प्रदेश के मध्य हिस्से में पहुंच रही हैं। इस बार यह हवा ग्वालियर-चंबल की ओर मुड़ ही नहीं रही है।

5 जिलों में शीतलहर का अलर्ट– मौसम विभाग के बुलेटिन के अनुसार, भोपाल, सीहोर, राजगढ़, इंदौर और शाजापुर जिलों में शीतलहर का येलो अलर्ट जारी किया गया है। जब पश्चिमी विक्षोभ होता है तो हल्की सर्दी की बारिश यानी मावठा गिरता है। जिससे तापमान में गिरावट होती है। भोपाल, उज्जैन, मंदसौर, रतलाम में बारिश ठंड को तेज करेगी।

भोपाल में रिकॉर्ड टूटा

इस बार सर्दी का जबरदस्त असर देखने को मिल रहा है। भोपाल में ठंड ने 84 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया है। वहीं, इंदौर में 25 साल बाद कड़ाके की सर्दी पड़ी है। गुरुवार को प्रदेश के अधिकतम शहरों के तापमान में गिरावट दर्ज की गई। राजगढ़ में 5.2 डिग्री, नौगांव में 6.4 डिग्री, उमरिया में 6.6 डिग्री, रीवा में 7 डिग्री, मलाजखंड में 7.2 डिग्री, मंडला में 7.6 डिग्री, रायसेन, शिवपुरी–नरसिंहपुर में 8 डिग्री, बैतूल में 8.5 डिग्री, छिंदवाड़ा–खजुराहो में 9 डिग्री, सतना में 9.1 डिग्री, टीकमगढ़–रतलाम में 9.5 डिग्री, दमोह में 9.8 डिग्री और दतिया में 9.9 डिग्री सेल्सियस रहा।

डाक महिला संगठन का सेवा कार्य जारी

इंदौर। समाजसेवा की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए डाक महिला संगठन इंदौर द्वारा इस वर्ष भी जरूरतमंदों को सर्दी से बचाव हेतु सहायता प्रदान की गई। संगठन के सदस्यों ने शुक्रवार को आश्रम पहुँचकर बच्चों को ऊनी कपड़े और पौष्टिक खाद्य सामग्री वितरित की। यह सेवा कार्य पोस्टमास्टर जनरल एवं संगठन अध्यक्ष श्रीमती प्रीति अग्रवाल के नेतृत्व में संपन्न हुआ। बच्चों ने गर्म वस्त्र पाकर खुशी जताई और संगठन के सदस्यों द्वारा दिखाए गए स्नेह से उत्साहित दिखाई दिए। डाक महिला संगठन समय-समय पर सामाजिक गतिविधियों में भाग लेता रहा है। हर वर्ष सर्दियों में जरूरतमंद बुजुर्गों और बच्चों को गर्म कपड़े उपलब्ध कराना संगठन की महत्वपूर्ण परंपरा रही है। इस पहल से कई परिवारों और आश्रमों को राहत मिलती है।

पत्नी के साथ मारपीट में कान कटा

इंदौर। राजेंद्र नगर पुलिस ने माया मंसोरे निवासी अर्जुन नगर की शिकायत पर मनोज मंसोरे के खिलाफ मारपीट को लेकर एफआईआर दर्ज की है। माया ने बताया कि वह मेड का काम करती है। पति शराब के नशे में घर आए थे। इस बात का उसने विरोध किया। तब पति ने अपशब्द कहे और हाथ-मुक्कों से मारपीट की। पति ने कान के टॉप्स खींचे, जिससे उसका कान कट गया। पुलिस ने इस मामले में पति पर एफआईआर दर्ज की है।

अहिल्या लाइब्रेरी के प्रभार से लिली को हटाया

इंदौर। लोक शिक्षण संचालनालय के जारी आदेश में देवी अहिल्या केंद्रीय पुस्तकालय इंदौर की प्रभारी (प्राचार्य) लिली डाबर को उनके वर्तमान प्रभार से हटाकर तत्काल प्रभाव से खजराना हायर सेकेंडरी स्कूल में पदस्थ कर दिया गया है। आदेश आयुक्त लोक शिक्षण शिल्पा गुप्ता द्वारा जारी किया गया। उनकी पदस्थापना विसंगति थी, जिसमें सुधार किया गया। गौरतलब है कि 4 अगस्त 2023 के शासन आदेश के तहत लिली डाबर को उच्च पद का प्रभार देते हुए अहिल्या केंद्रीय पुस्तकालय में पदस्थ किया गया था। जबकि, पुस्तकालय में उच्चतर माध्यमिक प्राचार्य का पद स्वीकृत ही नहीं है।

इस विसंगति को दूर करते हुए अब उन्हें उनके पद के अनुसार उन्हें नवीन शाला में भेजा गया है। जारी आदेश के अनुसार संबंधित अधिकारी को तुरंत

कार्यमुक्त होकर नई पदस्थापना पर कार्यभार ग्रहण करना होगा। कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व कोई अवकाश स्वीकृत नहीं किया जाएगा। यदि संबंधित अधिकारी पूर्व संस्थान में अनधिकृत अनुपस्थिति में पाई जाती हैं, तो जिला शिक्षा अधिकारी को तीन दिवस में रिपोर्ट भेजने के निर्देश भी दिए गए हैं। नई पदस्थापना के साथ डाबर अब शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल खजराना इंदौर में पदभार संभालेंगी।

स्कूल के छात्रों ने सीखा सुरक्षा का पाठ

इंदौर। बढ़ते साइबर अपराधों पर रोक और विद्यार्थियों को जागरूक करने के उद्देश्य से पुलिस द्वारा लगातार अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में एम.के.वी.वी. स्कूल में पुलिस की ÷साइबर पाठशाला÷ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अति.पुलिस उपायुक्त क्राइम राजेश दंडोतिया ने टीम के साथ करीब 250 विद्यार्थियों को साइबर फ्रॉड, फाइनेंशियल ठगी और सोशल मीडिया अपराधों की जानकारी दी। छात्रों को बताया गया कि ऑनलाइन पढ़ाई या गेम खेलते समय सतर्कता बेहद जरूरी है। किसी अनजान लिंक, ऐप या लुभावने ऑफर पर भरोसा न करें। साइबर अपराध होने पर तुरंत हेल्पलाइन 1930 या पोर्टल पर शिकायत करने की प्रक्रिया भी समझाई गई। साथ ही इंदौर पुलिस के एआई आधारित 'सेफ क्लिक' चैटबोट की जानकारी देकर डिजिटल सुरक्षा के प्रति सतर्क रहने का संदेश दिया गया।

शादीशुदा महिला किसी के भी साथ रहने को आजाद, हाईकोर्ट ने कहा

महिला पुलिस अभिरक्षा में भानपुरा से हाई कोर्ट लाया गया

इंदौर। शुक्रवार को एक महिला को पुलिस सुरक्षा में हाईकोर्ट की इंदौर खंडपीठ में लाया गया। यहां इस महिला ने कहा कि वह याचिकाकर्ता के साथ रहना चाहती है, लेकिन उसके माता-पिता ने जबरदस्ती अपने पास रखा है। इस पर कोर्ट ने कहा कि बालिग महिला अपनी पसंद के व्यक्ति के साथ रहने को स्वतंत्र है। माता-पिता का कहना था कि उसकी पहले शादी हो चुकी है। उसे अपने पति के साथ रहना चाहिए। लेकिन, कोर्ट ने यह कहते हुए दलील खारिज कर दी कि महिला 25 साल की बालिग है। वह अपनी पसंद के व्यक्ति के साथ रहने के लिए आजाद है, भले ही उसकी शादी पहले हुई हो। इसके बाद जस्टिस प्रणय वर्मा और जस्टिस विनोद कुमार द्विवेदी की कोर्ट ने उसे उसके पति के सुपुर्द किया। साथ ही पुलिस को दोनों को सुरक्षित सवाई माधोपुर पहुंचाने के आदेश दिए। सवाई माधोपुर निवासी धीरज नायक ने हाईकोर्ट में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर कर आरोप लगाया था, उसकी पत्नी को उसे सौंपा नहीं जा रहा है। कोर्ट ने 2 दिसंबर को कोर्ट में पेश करने को कहा, लेकिन महिला को पेश नहीं किया गया।

गुरुवार को उसके माता-पिता की ओर से बताया गया कि संध्या मंदसौर की भानपुरा तहसील के ग्राम पंगा में है और वह अभी कोर्ट में नहीं आ सकती है। इस पर कोर्ट ने मंदसौर के सबसे सीनियर ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट को भेजकर महिला के बयान दर्ज करने के लिए कहा था। महिला के बयान के बाद कोर्ट ने उसे माता-पिता की गिरफ्त से निकालकर शुक्रवार को कोर्ट में पेश करने कहा था। साथ ही निर्देश दिए मंदसौर एसपी व थाना पुलिस महिला और उसके वकील के मंदसौर से इंदौर तक आने-जाने की सुरक्षा का इंतजाम करेंगे। पति को महिला के इंदौर निवासी परिवार से धमकियां मिलने पर कोर्ट ने महिला को इंदौर में भी सुरक्षा देने को कहा था।

समकालीन कथा-साहित्य 2025

दीपक गिरकर
समीक्षक

यथार्थ और प्रयोगशीलता का मिश्रण है उपन्यास के कथानक

समकालीन हिंदी कथा साहित्य समाज और जीवन के बदलते यथार्थ का सजीव दर्पण है। समकालीन कथाकारों ने पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों में हो रहे तनाव, विघटन और जटिलताओं को गहराई और ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया है। वे न केवल बाहरी घटनाओं, बल्कि पात्रों के आंतरिक संघर्ष, मानसिक और भावनात्मक उथल-पुथल को भी उजागर करते हैं। स्त्री विमर्श, दलित और अल्पसंख्यक प्रश्न, भूमंडलीकरण, बाजारवाद और दो पीढ़ियों के वैचारिक अंतर जैसे विषयों को कथाएँ केंद्र में लाती हैं। समकालीन कहानी जीवन के भोगे हुए सत्यों और सामाजिक असमानताओं से सीधे टकराती है, पाठकों को सोचने और सामाजिक यथार्थ का मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करती है। इस दौर की कहानी न केवल यथार्थवाद पर आधारित है, बल्कि भाषा, शैली और शिल्प में नवाचार और प्रयोगशीलता के माध्यम से जीवन की जटिलताओं को सजीव और प्रामाणिक रूप में चित्रित करती है।

प्रमुख कथाकार जैसे गीतांजलि श्री, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, बलराम, संजीव, पंकज सुबीर, डॉ. हंसा दीप, सुधा ओम ढींगरा, तेजेन्द्र शर्मा, प्रज्ञा रोहिणी, अशोक वाजपेयी, उदय प्रकाश, ममता कालिया, आशा शर्मा 'विपुला', सुषम बेदी, प्रभा खेतान, मुद्राराक्षस, निलय उपाध्याय, शशिभूषण द्विवेदी, सुधा अरोड़ा, ज्ञानरंजन, नैना जायसवाल, सूर्यबाला, मधुरेश, विनोद कुमार शुक्ल, काशीनाथ सिंह, सत्य व्यास, मानव कौल, मृदुला गर्ग, उषा प्रियंवदा, अस्ग़र वजाहत, अनामिका, रत्नकुमार सांभरिया, गंगाराम राजी, डॉ. अजय शर्मा, गीता श्री, मनीषा कुलश्रेष्ठ, मनीष वैद्य, तेज प्रताप नारायण, गुलाब कोठारी, संतोष दीक्षित, ज्ञानचन्द बागड़ी, अलका सरावगी, जया जादवानी, डॉ. उर्मिला शिरीष, निधि अग्रवाल, डॉ. राजेंद्र रत्नेश, लक्ष्मी शर्मा, शिवेंद्र, मृदुला श्रीवास्तव, ममता सिंह, अनिता रश्मि, पल्लवी विनोद, संतोष श्रीवास्तव, सुधा जुगरान, प्रितपाल कौर, जयंती रंगनाथन, एम.एम. चन्द्रा, पारमिता षड़ंगी, कविता वर्मा, आभा श्रीवास्तव, अश्विनी कुमार दुबे, ज्योति जैन, अरुण अर्णव खरे, दिलीप जैन, शेर सिंह आदि ने अपने कथ्य और शैली के माध्यम से समकालीन जीवन की यथार्थता और मानवीय संवेदनाओं को उभारते हुए हिंदी कथा साहित्य को समृद्ध किया है।

राजपाल एंड संस से प्रकाशित कथाकार पंकज सुबीर का कहानी संग्रह 'ख़ैबर दर्रा' मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक यथार्थ और मनोवैज्ञानिक गहराई का प्रभावशाली दस्तावेज़ है। उनकी किस्सागोई की शैली आम जिंदगी के निकट है, जिसमें पात्र, परिवेश और घटनाएँ अत्यंत जीवंत और सजीव प्रतीत होती हैं। राजनीति, साम्प्रदायिकता, मूल्यहीनता, अवसरवाद, पितृसत्ता, भ्रष्ट व्यवस्था, प्राकृतिक सौंदर्य, थर्ड जेंडर और होमोफोबिया जैसे विविध सामाजिक मुद्दे उनकी कहानियों में सहज रूप से उपस्थित होते हैं। कथाकार इंसानी भावनाओं, स्मृतियों और जीवन-संघर्षों को इतनी बारीकी से उकेरते हैं कि पाठक हर कहानी के साथ खुद को जुड़ा हुआ महसूस करता है। इस संग्रह की कहानियाँ - 'एक थे मटरू मियाँ एक थी रज्जो', 'हरे टीन की छत', 'ख़ैबर दर्रा', 'वीरबहूटियाँ चली गईं', 'देह धरे का दंड', 'निर्लिंग', 'आसमान कैसे-कैसे', 'कबीर माया पापणीं' और 'इजाज़त-घोड़ाडोंगरी'–केन्द्र में इंसानी जटिलताएँ, मासूम प्रेम, सामाजिक विसंगतियाँ और बदलते मूल्य आते हैं।

सुबीर सामाजिक अन्याय, मीडिया की दिखावटी दुनिया, प्रकृति से बढ़ती दूरी, लिंग-पहचान की पीड़ा और रिश्तों में आए बदलाव को बेहद संवेदनशीलता और प्रभावशीलता से प्रस्तुत करते हैं। संग्रह की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसकी हर कहानी न सिर्फ विचार जगाती है, बल्कि पाठक को भीतर तक छू जाती है। पंकज सुबीर का कथा-शिल्प, भाषा का सहज प्रयोग और कथानक की पकड़ उन्हें समकालीन हिन्दी कहानीकारों में विशिष्ट बनाती है।

राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित गीतांजलि श्री का 'सह-सा' उपन्यास छोटे-छोटे प्रसंगों से निर्मित मानव-नियति और विविध जीवन-संदर्भों के सह-अस्तित्व की कथा है, जिसमें एक परिवार के भीतर की खामोश संघर्ष-स्थितियाँ और दिशाहीनता संवेदनशीलता से उभरती हैं। सेतु प्रकाशन समूह से प्रकाशित रत्नकुमार सांभरिया का उपन्यास 'नटनी' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि साहित्य की वह प्रकाश-रेखा है जो अँधेरे में डूबे समुदायों पर प्रकाश डालकर उन्हें उनकी आत्मगाथा कहने का साहस देती है। यह कृति हाशिये के समाज को केंद्र में रखकर मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पहचान के प्रश्नों को नई तीव्रता के साथ उभारती है।

राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित अलका सरावगी का उपन्यास 'कलकत्ता कॉस्मोपॉलिटन-दिल और दरारें' कॉस्मोपॉलिटन कलकत्ता की जटिल गाथाओं और विविध जीवन-स्थितियों को उजागर करता है। यह 'सुनील बोस/मोहम्मद दानियाल' की पहचान, संघर्ष और सच-झूठ के द्वंद्व के माध्यम से शहर के सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय विविधताओं को मार्मिक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

सेतु प्रकाशन समूह से प्रकाशित संतोष दीक्षित के उपन्यास 'ख़लल' आज की एक विकट समस्या की शिनाख्त करता है। उपन्यास सियासत और पूँजी के गठजोड़ को उजागर करता है, जो गरीबों को विस्थापित कर कंपनियों के लिए भूमि हड़पना चाहती हैं। मुआवज़े और रोजगार के सब सपने छल साबित होते हैं, और समुदाय दोहरे विस्थापन - ज़मीन और सौहार्द दोनों के खोने का शिकार बनता है। राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित अनामिका का उपन्यास 'दूर देश के परिन्दे' स्वतंत्रता-पूर्व और आसपास के वर्षों में विश्व-प्रसिद्ध पुरुषों के जीवन में आई स्त्रियों की कथा प्रस्तुत करता है। ये स्त्रियाँ उस समय की महिलाओं के लिए प्रेरणा बनती हैं, क्योंकि उनके सहचर्य में धैर्य, ममता, सहिष्णुता और त्याग जैसे गुण स्त्री और पुरुष दोनों में संतुलित रूप से विकसित होने की संभावना दिखती है।

राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित जया जादवानी का उपन्यास 'इस शहर में इक शहर था' विभाजित सिन्ध और उसके लोगों की गहरी कसक एवं पीड़ा का मार्मिक आख्यान प्रस्तुत करता है। राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित सुजाता का उपन्यास 'दरयागंज वाया बाज़ार फ़त्ते ख़ाँ' तीन पीढ़ियों के माध्यम से विभाजन झेलने वाले मुल्तानी लोगों की अनकही दास्तान खोलता है - उनकी ज़बान, तहज़ीब और अपनी पहचान खोने के भय सहित। उपन्यास विभाजन की ज्ञात त्रासदी से आगे बढ़कर इन छिपी कथाओं को उजागर करता है।

शिवना प्रकाशन से प्रकाशित लक्ष्मी शर्मा का उपन्यास 'लीला गाथा-एक कुप्रसिद्ध इंदौरी औरत की' लीला इंदौर की एक निम्न मध्यम वर्गीय बस्ती की सच्ची, संघर्षशील महिला की कथा है। लक्ष्मी शर्मा ने अपनी भावभीनी लेखनी से सन सत्तर के इंदौर की उस बस्ती और उसके निवासियों के जीवन, संघर्ष और संस्कृति को जीवंत किया है। कथा में लीला के कठिन वैवाहिक और सामाजिक अनुभवों के बावजूद उसका व्यक्तित्व और संघर्ष उसे और उज्जवल बनाते हैं। उपन्यास इंदौर को स्वयं एक पात्र बनाकर पाठक को उसी समय-काल में ले जाता है और पात्रों के सुख-दुख को महसूस करने का अवसर देता है।

शिवना प्रकाशन से प्रकाशित सुधा जुगरान का उपन्यास ÷मन के चौहट्टे पर बोनसाई÷ मध्यम वर्गीय परिवार और कामकाजी युवाओं के जीवन का सामाजिक यथार्थ दर्शाता उपन्यास है। सुधा जुगरान ने आठ मुख्य पात्रों - सुनंदा, समर, सोमी, रोमिल, रियाना, अनुपम, रिजुल और मेहुल के माध्यम से दाम्पत्य, परिवार और मित्र संबंधों में उत्पन्न द्वंद्व और संवादहीनता का मार्मिक चित्रण किया है। उपन्यास उत्तराखंड के प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिवेश में भी गहराई से सेट है, जिससे पाठक कथानक में पूरी तरह डूब जाता है। लेखिका की मनोवैज्ञानिक समझ, पात्रों की स्वाभाविकता और सामाजिक सरोकार उपन्यास की प्रमुख विशेषताएँ हैं। शिवना प्रकाशन से प्रकाशित प्रियंका ओम का उपन्यास 'साज़-बाज़' केवल एक प्रेम-कथा नहीं, बल्कि आत्म-प्रतिबिंबित दस्तावेज़ है, जिसमें नायिका देविका के माध्यम से लेखिका ने अपने भीतर की संवेदनाओं और द्वंद्वों को व्यक्त किया है। यह उपन्यास भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक यात्रा है, जो आधुनिक स्त्री की स्वतंत्रता, प्रेम और आत्म-अस्तित्व की जटिलताओं को संवेदनशीलता से चित्रित करता है।

न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन से प्रकाशित आभा श्रीवास्तव का कहानी संग्रह 'पच्चीसवां प्रेम पत्र' की कहानी 'पच्चीसवां प्रेम पत्र' स्त्री जीवन, प्रेम और सामाजिक यथार्थ का संवेदनशील चित्रण है। कहानी में मीना अपने लॉकर में हार खोजते हुए अतीत की परतों को खोलती है और राहुल, उसका पहला प्रेम, स्मृति में जीवित हो उठता है। चौबीस प्रेम पत्र माँ द्वारा जला दिए गए थे, लेकिन माउथ ऑर्गन में लिपटा पच्चीसवां पत्र अतीत की यादों और अधूरे प्रेम को पुनर्जीवित करता है। यह केवल मीना की कहानी नहीं, बल्कि उस पीढ़ी की कथा है, जिनके पहले प्रेम को सामाजिक और पारिवारिक प्रतिबंधों ने पीछे छोड़ दिया।

राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित निधि अग्रवाल का कहानी संग्रह 'प्रेम एक पालतू बिल्ली' जीवन की जटिलताओं, संघर्ष और मानवीय संवेदनाओं का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। कहानियाँ पात्रों के भीतर की लड़ाई, अकेलेपन, पीड़ा और आशा को जीवंत रूप में दिखाती हैं। उनकी लेखनी सरल, संवेदनशील और प्रभावशाली है। यह संग्रह केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन, प्रेम और मानवीय संघर्षों की गहन विचार यात्रा कराता है।

शिवना प्रकाशन से प्रकाशित मनीष वैद्य के कहानी संग्रह 'गुलाबी इच्छाएँ' में स्वच्छंद, निश्छल और संवेदनशील प्रेम की जीवंतता प्रस्तुत होती है। ये कहानियाँ पाठक को प्रेम की गहराइयों, अधूरी इच्छाओं और बचपन की मासूम यादों से जोड़ती हैं। हर कहानी अपने प्रतीकात्मक और भावपूर्ण स्वरूप से प्रेम के विभिन्न आयामों को उजागर करती है। ग्रामीण परिवेश और प्राकृतिक दृश्य पात्रों की अनुभूतियों के साथ सहज रूप से गूंथे गए हैं। यह संग्रह प्रेम को नए दृष्टिकोण और कलात्मक अभिव्यक्ति के साथ प्रस्तुत करता है, जिसमें जीवन, स्मृति और मानवीय संवेदनाओं का सुंदर मिश्रण है।

शिवना प्रकाशन से प्रकाशित 'एक ख़ला है सीने में' (किन्नर विमर्श की कहानियाँ) किन्नर समुदाय के जीवन, संघर्ष और सामाजिक बहिष्कार को उजागर करता है। इस संकलन की 22 कहानियाँ किन्नरों के अधिकार, आत्म-सम्मान और मानवीय संवेदनाओं को सामने लाती हैं। परिवार और समाज द्वारा त्याग और भेदभाव झेल रहे किन्नरों की पीड़ा, आशा और संघर्ष को कथाकारों ने यथार्थ और संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। संपादक सुधा ओम ढींगरा ने इन कहानियों में समाज के प्रति सक्रिय दृष्टिकोण और किन्नरों के जीवन की जटिलताओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। यह संग्रह पाठक को अंत तक बांधे रखता है और किन्नर जीवन की हृदयस्पर्शी वास्तविकता से रूबरू कराता है। संकलन का संपादन सुपरिचित प्रवासी साहित्यकार, कथाकार सुधा ओम ढींगरा ने किया हैं।

नीरज बुक सेंटर से प्रकाशित शेर सिंह का कहानी संग्रह ÷चेन्ना माया÷ में 17 कहानियाँ संकलित है। शेर सिंह अपनी कहानियों में जीवन के छोटे-छोटे प्रसंगों को बड़ी सहजता और सर्जनात्मक क्षमता के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनके पात्र यथार्थवादी और जीवंत हैं, जिन्हें ऐसा लगता है कि लेखक उनके साथ रहा हो। कहानियाँ पहाड़ी परिवेश, खासकर कुल्लू और उसके आसपास के ग्रामीण जीवन, सामाजिक समस्याओं, गरीबी, स्त्री पीड़ा, अंधविश्वास और शोषण की वास्तविक झलक पेश करती हैं। डायमंड बुक्स से प्रकाशित अनिल गोयल का उपन्यास 'नया सवेरा' 1975 में लगे आपातकाल की घटनाओं पर आधारित एक मर्मस्पर्शी कथा है, जो इतिहास, तथ्य और हृदयस्पर्शी नेहाख्यान के माध्यम से उस काली रात का यथार्थ उजागर करती है। इक्कीस माह तक चले आपातकाल में जेलों में बंद किए गए लाखों लोगों की पीड़ा, असंवैधानिक अत्याचार और समाज पर पड़े संकटों को यह उपन्यास जीवंत करता है।

नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित गुलाब कोठारी के उपन्यास 'स्त्री देह से आगे' में दर्शाया है कि मां, बहन, पत्नी और पुत्री सभी रूपों में स्त्री की दिव्यता शाश्वत है; उसका रौद्र रूप भी उतना ही प्रभावशाली और विध्वंसक है। आज यह अंतर्निहित दिव्यता शिक्षा और संचार माध्यमों के आवरणों में दब गई है। लेखक ने प्राचीन वाङ्मय के उदाहरणों के आधार पर वैज्ञानिक दृष्टि से इन आवरणों को उद्भासित किया है। सर्व भाषा ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'नंदिता अभिनव' कथाकार अशोक लव द्वारा लिखित एक चर्चित समकालीन हिंदी उपन्यास है, जो आधुनिक भारतीय समाज, राजनीति और युवाओं के बदलते मूल्यों को दर्शाता है, जिसमें नंदिता नामक मुख्य पात्र के संघर्षों और समाज के कटु यथार्थ को दिखाया गया है; यह उपन्यास वैश्विक परिदृश्यों (जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध) और देश की सामयिक समस्याओं को छूता है और सशक्तिकरण व सामाजिक बदलाव की बात करता है।

कविता

कल रहे हैं लोग

कमलेश कुमार दीवान

धीरे धीरे ही जल रहे हैं लोग
मोम से यूं ही गल रहे हैं लोग।

हौसलें हैं तो जुस्तजू भी बहुत
आरज़ू में ही चल रहें है लोग।

याद से दिल में हलचल है बहुत
क्यों अपने आप छल रहे हैं लोग।

जिंदगी से सभी मुखातिब हैं
मुश्किलों से ही ढल रहे हैं लोग।

नया युग है नया ही जीवन है
सवालों के ही हल रहे हैं लोग।

आज में कौन है 'दीवान' यहां
अपना ही एक कल रहे हैं लोग।

रचनात्मकता पर लिट्रेचर क्लब देवास का आयोजन

देवास। रचनात्मकता भी सतत एक ही दिशा में बहते हुए रचनाकार के मोनोटोनस एफर्ट्स के कारण यांत्रिक हो सकती है, और वह यांत्रिक रचनात्मकता मात्र स्किल होगी, चाहे लेखन के रूप में हो या किसी और कलाकर्म के रूप में।

रचनात्मकता की इस यांत्रिकता को तोड़ना एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। इस यांत्रिकता से मुक्ति तभी पाई जा सकती है, जब हम विचारों के उन ग्रूव्स से बाहर निकलें और उस चक्र को तोड़ पाएं। दरअसल, रचना-कर्म करते-करते उसकी आदत से बंध जाना इसका कारण है।

रचनात्मकता को पोषण देना गहरे तलों पर तब संभव होता है, जब रचनाकार उस रचनात्मकता के तनाव से मुक्त होता है। उस तनाव-मुक्त दशा में, उसके अवचेतन के द्वार जब खुलते हैं, तो अनुभवों के बीज वहाँ पल्लवन पाते हैं; अभिव्यक्ति वहाँ सहज प्रवाह पाती है, जो किसी रचनाकार के रचना-कर्म के लिए, उसकी रचना-भूमि को उर्वर बनाने के लिए महती ज़रूरत है।

इसी महत्वपूर्ण बात को ख़याल में रखते हुए 'लिटरेचर क्लब देवास' ने

एक नवाचारी आयोजन किया, जिसमें निसर्ग के संग-साथ में, रचनाधर्मी साथियों के सान्निध्य में एक समवेत ग्राह्यता के साथ उस रचनात्मक पोषण की उपलब्धि पाई। साथियों ने एक आनंद-यात्रा की, जहाँ निसर्ग था, प्रकृति का नीरव सन्नाटा था, एक अनहद गूँज सतत महसूस की जा सकती थी। उस नीरव में, कुछ समय सिर्फ 'लेट-गो' की स्थिति में, ग्राह्य भाव से रचनात्मकता के प्रसाद को पाने के समवेत आह्वान के साथ रचनाधर्मी साथी जब बैठे, तो रचनात्मकता के अद्भुत आयाम खुलते हुए उन्होंने महसूस किए। और यह रचनात्मक यात्रा, रचनात्मक ऊर्जा के हाई-वोल्टेज चार्जिंग के समान, सभी साथियों को आविष्ठ कर गई। इस यात्रा के बाह्य-स्वरूप में बतरस था, व्यंजनों का रस था, गीत थे, नृत्य थे, प्रकृति के बीच विहार था और आत्मीयता का समाहार था।

किसने देखा है

बिल्लौरी , रंगीन
शीशों से उभरते
रंग बिरंगे
इंद्रधनुषों
अक्सों के महानगर में
सपनों के पीछे
दौड़ते दौड़ते
वह नहीं जानता
कब बन गया वह मशीन,
पूंजीवादी कलपुर्जा
या फाइव स्टार में
परोसा जाता चूजा !
घड़ी में तब्दील
मानस उसका
अब न तो रुक पाता है
न देख पाता है
इंद्रधनुषी रंग
न ले पाता है खुशबू
न जायका !!
सच ही है
किसने देखा है
मशीन को
यह सब देखते ,
सूंघते या चखते !!
– संदीप राशिनकर

लघुकथा
रामेश्वरम तिवारी

स्वयंवर

बड़ी मन्नतों, चिकित्सीय उपचारों और सालों के इंतज़ार के बाद सेठ गंगाराम जी के घर में किलकारी गूँजी। उन्होंने शहर की तमाम बड़ी हस्तियों को आमंत्रित किया और बड़ी धूमधाम से बालिका का नामकरण संस्कार करवाया। पंडित जी ने जन्म स्थान, समय और तिथि के हिसाब से कन्या राशि अनुसार प, पा, पी अक्षर से नाम सुझाया। सेठ-सेठानी ने काफ़ी विचार-विमर्श के बाद बेटी का नाम परिधि रखा। यह सोचकर की परिधि अपने नाम के अनुसार अपने ख़ानदान की मर्यादा का पालन कर माता-पिता का नाम रौशन करेगी।

सेठ जी का शहर में बड़ा नाम और कारोबार फैला हुआ था। वे अनेक धार्मिक संस्थानों के अध्यक्ष और निर्णायक मंडल में मानद सदस्य थे। दान-पुण्य के मामले में हमेशा बढ़-चढ़कर आगे रहते थे। उन्होंने परिधि को अपनी इच्छा अनुसार पढ़ने-लिखने और घूमने-फिरने की पूरी आज़ादी दे रखी थी। मात्र उनकी इतनी बंदिश थी कि वह कभी कोई ऐसा काम नहीं करेगी जिससे समाज में उनका नाम बदनाम हो और लोगों के समक्ष नीचा देखना पड़े,

किंतु भाग्य का लिखा और होनी को भला आजतक कोई टाल सका है।

जीवन के कुछ सार्वभौमिक मान, मूल्य और विधान हैं। शास्त्रों के अनुसार उनका पालन करना अनिवार्य है। जो कोई व्यक्ति उनका उल्लघंन करता है प्रकृति उसको कभी नहीं बक्शती है। सेठ जी द्वारा दी गई आजादी का परिधि ने दुरुपयोग और अवमानना करना शुरू कर दी ।वह ग़लत संगत का शिकार हो गई। आए दिन अपने मित्रों की पार्टियों में आना-जाना शुरू कर दिया। सेठ जी की आदर्शमयी बातों की उपेक्षा करना, उन्हें पुरातनपंथी और दक़ियानूसी ठहराने लगी। बात-बेबात पर वाद-विवाद करना, देर रात घर लौटना और कभी-कभी तो पूरी रात ही बाहर गुज़ारने लगी।

और एक दिन ऐसा आया जब शहर भर के लोगों को अख़बार में सनसनीखे़ज़ खबर पढ़ने को मिली। धनी-मानी और नामी-गिरानी गंगाराम जी बेटी परिधि ने अपने माँ-बाप की मान-मर्यादा को तार-तार कर, इज्जत को ताक पर रखकर, उनकी प्रतिष्ठा को ठोकर मारकर किसी अधर्मी, विधर्मी के साथ स्वयंवर रचा लिया है।

राजकुमार कुम्भज
की तीन कविता?

फिर जीत है निश्चित

उड़ानें हों, हौसले हों
तो बदल ही जाती है आकाश की रँगत भी
वे तीर जो तेज़ रफ़्तार, तेज धार लिए

आते हैं, आते हैं इधर विरुद्ध ही अभी
हो भी सकते हैं समर्थन में चारण
हो सकते हैं कारण कई-कई
हों अगर उड़ानें, हों अगर हौसले
तो मॉंजता है रास्ता भी सब
फिर जीत है निश्चित.

कुछ-कुछ परिचित भी

वे जो मारते हैं चोंच
नवजात शिशुओं तक को
नोंच लेते हैं अपनी हवस में
ज़रा भी छोड़ते नहीं हैं शिक़ायतें
मुस्कुराने नहीं देते हैं ज़रा भी नहीं
जाते हैं,जाते हैं अट्टहास में
बिछाते हैं बिस्तर और सो जाते हैं
हो सकता है कि हो सकते हों वे
कुछ-कुछ परिचित भी.

उम्मीद के लिए

थोड़ा-सा नमक,थोड़ा-सा उजास
ज़रूरी है जीवनभर की उम्मीद के लिए
एक गॉंठ है कि जिसे मैं खोलता रहता हूँ
संपूर्णता से संपूर्ण जीवनभर के सूने में
एक गुलदस्ता, एक व्यवस्था है आततायी
और वह उसकी मनमोहक मुस्कान
जिसमें बिच्छू ही बिच्छू.

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लिमिनल ग्राउंड और पाँच कलाकारों के भाव

कला

पंकज तिवारी
कला समीक्षक

ऋग्वेद के दसवें मंडल के 129वें सूक्त, नासदीय सूक्त के सातों मंत्रों में जीवन के रहस्यमय परिस्थितियों, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, अस्तित्व आदि का जिक्र है और बड़े विषद रूप में है बावजूद इसके आश्चर्य यह कि अंत में सब कुछ होकर भी कुछ नहीं होने की बात है, कौन? कैसे? प्रश्नों से रहस्यमय परिस्थितियों को और अधिक रहस्यमय में बदल देने की बात है ताकि भविष्य के गर्त में क्या है जिसके हेतु आने वाला समय, आने वाले लोग भी अधिक से अधिक समृद्ध तरीके से रहस्यों से पर्दा उठा सकें या उठाने का प्रयास कर सकें। प्रदर्शनी लिमिनल ग्राउंड में भी ऐसे ही ग्राउंड की बात करी गई है जहाँ स्थिरता, अस्थिरता दोलन की भाँती इधर से उधर झूलती सी प्रतीत होती है। प्रदर्शनी पाँच कलाकारों की सामूहिक प्रदर्शनी है, जिसमें सभी अपने-अपने बेचैन प्रश्नों के साथ खड़े दिखाई पड़े हैं पर सभी एक वृक्ष की अनेक शाखाओं की भांति जुड़े भी हुए हैं और परेशान हैं कि कुछ प्राप्त करने के चक्कर में हम कितना कुछ खोते जा रहे हैं या बस और बस सिर्फ खो ही रहे हैं। एक तरफ हम रोज नई-नई ऊँचाइयों को छूते जा रहे हैं तो दूसरी तरफ जल, जंगल, जमीन, नेह, रिश्ते, संस्कार-संस्कृति सब कुछ खोते जा रहे हैं। कलाकार स्वपन पाल के कृतियों में माँ के आँखों में बच्चा और बच्चे का भविष्य है तो वहीं माँ की बेचैनी, उदारता भी है जबकि कलाकार सूरज गोराई के कृतियों में टूटे-फूटे बर्तनों का आपसी तालमेल है और उसी में रचा-बसा एक पूरा संसार भी, एक ऐसा संसार जो अब धीरे-धीरे इतिहास हो चुका है। कलाकार मिलन कर्माकर के कृतियों में भाव और भावों के आत्मिक यात्रा का सच है जो कहीं-कहीं अतिरेक तक पहुँच गया है। बप्पादित्य राय चौधरी के कृतियों में शहर के चकाचौंध में खुद के कहीं खो जाने का डर साफ दिखता है जबकि अनुजा पंजवानी की कृतियाँ मिट्टी और मिट्टी से सने वातावरण का आपसी संयोजन है।

कलाकार अनुजा पंजवानी कहती हैं कि 'मेरे लिए मिट्टी केवल एक पदार्थ नहीं बल्कि विचारों, भावों को मन के आवेगानुसार रूपांतरित करने का एक प्रबल माध्यम है।' मन के आँगन में विचारों का विशाल फलक तैयार करने वाली कलाकार अनुजा पंजवानी के कृतियों में आकृतियों का मौन संवाद है जो बिना कहे ही बहुत कुछ कहने की कुव्वत रखती है। खुरदुरे किनारे, टूटी हुई आकृतियाँ और अपूर्ण एवं अमूर्त कृतियों की ऐसी सुंदरता जहाँ तक पहुँच पाना सभी के लिए संभव नहीं है। कलाकार अनुजा को वही पसंद है और दर्शकों हेतु वहीं से सृजन को बल देते हुए कुछ रचने का प्रयास भी करतीं हैं। भारत के सिरेमिक सिटी के रूप में अपनी पहचान बना चुके खुर्जा जैसे क्षेत्र में रहते हुए और रचते हुए कलाकार अनुजा भी खुर्जा के रंगों में रंग सी गई हैं और मिट्टी के सुगंध के साथ ही अपने कृतियों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर खुर्जा के महत्व को विस्तारित करने का प्रयास कर रही हैं। आकार का आकाश अनन्त है, मौन में संवाद अनंत है जैसे भावों के साथ ही वो अपने कृतियों में अनंत विषयों को लिए चलती हैं जहाँ कुछ पक्षों से संवाद तो सम्भव हो पाता है तो कुछ मौन ही रह जाते हैं और इंतजार करते हैं अगले का जो आये और उसके मौन में संवाद का एक नया अनुसंधान करे।

बंगाल के ग्रामीण परिवेश से आने वाले कलाकार बाप्पादित्य रॉय चौधरी के अंदर आज भी उनका बचपना जिंदा है। वो भले ही जीवन के लय में बहते हुए दिल्ली आ बसे हैं पर उनके कृतियों में गाँव, पहाड़, पेड़, जंगल, रात-दिन, जुगनू, जैसे घटक आज भी जिंदा है। उनका कहना कि 'हम परिवार या नौकरी के लिए भले शहरों में रहने को मजबूर हैं पर मन को मजबूती तो इन पहाड़ों, जंगलों और गाँवों में ही मिलती है।' बप्पादित्य के लिए कला तो मन के भीतर रोज टूट रहे, घुट रहे सपनों को पंख देना है और उसके साथ उड़ते हुए, बहते हुए एक अनंत यात्रा पर चले जाना है जहाँ सुकून हो, मन की अनंत गहराइयों में खुद को पहुँचा पाने की क्षमता हो, जहाँ सुख ही सुख हो, दुख की छाया तक न हो और जहाँ का जीवन चटकीला, तेज और स्वच्छ प्रकाश वाला हो और यही कारण है कि उनके कृतियों में चमकीले रंगों का अंबार है। ज्यामितीय आकृतियों और स्वच्छ रंगों के साथ अपनी दुनिया को फलक पर बड़े ही कुशलता के साथ प्रस्तुत कर देने वाले कलाकार बप्पादित्य राय चौधरी खुद भी बड़े प्रसन्न मन, हंसमुख मिजाज और मिलनसार प्रवृत्ति के हैं।

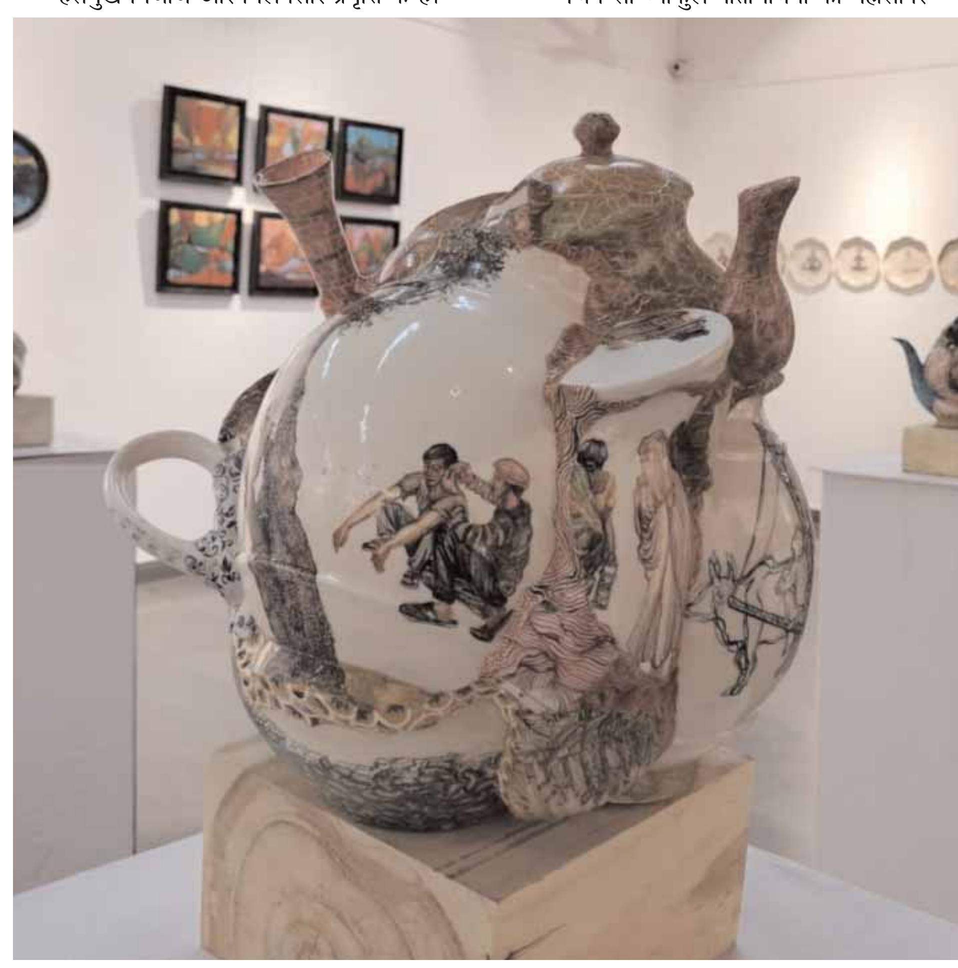

उनके कृतियों में जुगनुओं के प्रकाश का जो शोर चारों तरफ बड़े ही शालीनता के साथ फैला हुआ नजर आता है और लोगों को अपने उस प्रकाश से प्रभावित भी करता है ऐसे ही कलाकार का व्यक्तित्व भी है। उनका कहना है कि रंग, परिदृश्य और मानव के अनुभूतियों के बदलते भावनात्मक मिजाज के साथ मेरा जुड़ाव हमेशा से रहा है और आगे भी हमेशा जुड़ा रहे ऐसा प्रयास भी है। रंगों, रेखाओं, भावनाओं का लयात्मक जुड़ाव ही इनके कृतियों की थाती है। शहर में रहते लोग और मन के किसी कोने में रोज दमित होती हजारों भावनाओं का दुख, भागती-पराती जिंदगियाँ, बेचैन सी व्याकुल गतिविधियों का महासागर उनके कृतियों में है तो पर गहरे नीले, पीले और लाल रंगों के संयोग से उसे चमकदार परतों में तब्दील कर, सागर के गहराइयों से बीन कर, छान कर लाया गया मोती भी उनकी विशेषता है। आजकल उनकी सिरीज़ मूनलाइट हिल्स काफी प्रचलन में है। अर्पना कौर आर्ट गैलरी नई दिल्ली में प्रदर्शित लिमिनल ग्राउंड के पाँच कलाकारों में एक सूरज गोराई की भाषा जमीन से जुड़ी है। उनके लिए टूटे-फूटे वस्तुओं में भी सौंदर्य और सकारात्मक परिवेश होता है। वहाँ किसी भी चीज को लेकर नकारात्मकता के भाव नहीं हैं। छोटे से छोटे टुकड़ों के साथ भी संवेदनशील व्यवहार उनकी विशेषता सी लगती है। टुकड़ों को जोड़ कर जब एक नई आकृति तैयार होती है तो किसी नये के जन्म सा महसूस होता है जहाँ शेष ही विशेष की भूमिका में हो जाते हैं। उनके कृतियों में पुरानी भूली-बिसरी कहानियाँ अपने पूरे परिवेश के साथ उपस्थित हुई हैं। मिट्टी और स्थानीयता की महक भी है यहाँ। बहुत ही बारीकी के साथ गढ़ा गया है इन सभी को। खुर्जा का विशेष प्रभाव यहाँ भी स्पष्ट नजर आता है।

कलाकार मिलन कर्माकर कहते हैं कि मेरे कला-अभ्यास की प्रक्रिया प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा और उसकी अनंत सूक्ष्मताओं में निहित है। मैं हर जीव..चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, को एक दैवीय मूर्ति की तरह देखता हूँ, जिसे किसी उच्च शक्ति ने अपनी विशेष बनावट, रंग और बनावट के साथ गढ़ा और सजाया है। सिरेमिक के माध्यम से मैं इसी दृष्टि को व्यक्त करने का प्रयास करता हूँ। कलाकार के शब्दों पर गौर करें या कृतियों से जुड़ने का प्रयास करें हर जगह यह स्पष्ट है कि वाकई आंतरिक सुंदरता पर लगातार बहस है इनके यहाँ। कलाकार कर्माकर के कृतियों में गांव के तंत्र-मंत्र सा भी कुछ नजर आता है। शरीर पर या में एक विशेष प्रकार के जानवर का रेंगना मन के बेचैन परिस्थिति को दर्शाता है।

कलाकार स्वपन पाल के कृतियों में माँ है, माँ का प्यार है, गोदी में समाया बच्चा जैसे पा गया पूरा संसार है। यहाँ माँ प्रकृति है, आरंभ है, आकाश है तो अनवरत सम्हाल सकने की शक्ति को दर्शाती आधार भी है। माँ और बच्चे की जो दुनिया सृष्टि के शुरुआती दौर में थी वही अब भी है। चीजें, परिस्थितियाँ भले ही बदल रही हैं, लोग बदल रहे हैं, रहन-सहन, परिवेश बदल रहा है यहाँ तक कि वही माँ जिस बच्चे को अपने गले से लगाए पालती-पोसती है एक समय बाद वो भी बदल जाता है पर नहीं बदलती तो बस और बस माँ और माँ का नेह, दुलार जो यहाँ स्वपन पाल के कृतियों में दर्शित है।

सेवा, विचार और संयम का उजला अध्याय

जन्मशती स्मरण: माणकचंद कटारिया
कुमार सिद्धार्थ
लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

सन् 45 से 47 तक उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र में एम.ए. किया। यह अध्ययन उनके भीतर एक ऐसी दृष्टि लेकर आया जिसने सत्ता के मार्ग को किनारे रखते हुए लोकनीति और समाज-सेवा के पथ को चुना। उन्हें ज्ञात था कि राजनीति के अवसर आकर्षक हो सकते हैं, पर समाज के भीतर जाकर बदलाव की राह खोजने में ही सच्चा अर्थ है। इसी विचार के साथ वे गांधीवादी चिंतन के निकट आए और संपादकीय कार्य को अपने जीवन का साधन बनाया।

गांधीवादी विचारक,चिंतक, लेखक, स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदार रहे इंदौर में 29 नवंबर 1925 को जन्मे माणकचंद कटारिया उन विरल व्यक्तित्वों में थे, जिनके जीवन में सेवा, विचार और संयम का ऐसा संतुलन दिखाई देता था, जो आज भी प्रेरक बना हुआ है। उनका जीवन जितना सरल, उतना ही गहन था। 29 अक्टूबर 1977 को उनका अवसान हुआ, जो यह एक ऐसे व्यक्ति का वियोग था, जिसकी शांत उपस्थिति हर कार्य, हर योजना और हर संवाद में महसूस की जाती थी।

उनके सार्वजनिक जीवन की शुरुआत बाल्यावस्था में हो गई थी। 1941 में वे वीर वाचनालय और प्रजामंडल से जुड़े। वह समय स्वतंत्रता आंदोलन का था और वाचनालय की अलमारियों में सत्य-साहित्य और क्रांतिकारी पुस्तकों की गूंज से युवा मनों की दिशा बदल रही थी। इन्हीं पुस्तकों ने उनके भीतर राष्ट्रधर्म और नैतिक चेतना की ज्योति जलाई। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में प्रतिबंधित साहित्य के प्रसार की जिम्मेदारी उठाना किसी बालक का कार्य नहीं था, पर उन्होंने इसे अपने स्वभावगत निर्भीक संयम के साथ निभाया। 'करो या मरो' के पर्चों और साइक्लोस्टाइल की गई पत्रिकाओं के साथ उनकी गिरफ्तारी इसी कर्मठता का परिणाम थी। रिहा होने के बाद भी उनका कार्य-जीवन वहीं से आगे बढ़ता रहा–शांत, निरंतर और उद्देश्यपूर्ण।

सन् 45 से 47 तक उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र में एम.ए. किया। यह अध्ययन उनके भीतर एक ऐसी दृष्टि लेकर आया जिसने सत्ता के मार्ग को किनारे रखते हुए लोकनीति और समाज-सेवा के पथ को चुना। उन्हें ज्ञात था कि राजनीति के अवसर आकर्षक हो सकते हैं, पर समाज के भीतर जाकर बदलाव की राह खोजने में ही सच्चा अर्थ है। इसी विचार के साथ वे गांधीवादी चिंतन के निकट आए और संपादकीय कार्य को अपने जीवन का साधन बनाया। उन्होंने प्रजामंडल, लोक सेवक और कुछ समय के लिए दैनिक जागरण का संपादन गहन निष्ठा से किया। उनकी लेखनी में विचार की स्पष्टता, भाषा की सहजता और अनुभव की गहराई दिखाई देती थी।

इंदौर में जब बाल निकेतन संघ की स्थापना हुई तब प्रसिद्ध चिंतक और इंदौर की राजनीति के सूत्रधारों में प्रमुख तात्या सहब सरवटे ने उन्हें बाल निकेतन संघ के कार्य मंडल में सम्मिलित किया।

उनके जीवन का सबसे व्यापक और निर्णायक अध्याय इंदौर स्थित कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट में बीता। 1954 से 1976 तक उन्होंने 'कस्तूरबा-दर्शन' का संपादन किया। यह संपादन केवल पत्रिका के प्रबंधन का कार्य नहीं था; यह विचारों को आकार देने, संगठन की दिशा तय करने और गांधीवादी मूल्यों को समकालीन जीवन से जोड़ने का प्रयास था। कस्तूरबा-स्मारिका, ट्रस्ट की पच्चीस वर्षीय रिपोर्ट और साहित्यिक दिवाली अंकों में उनकी दृष्टि, भाषा और बौद्धिक अनुशासन स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है। गांधी-दर्शन प्रदर्शनी के आयोजन में भी उनकी भूमिका रही।

ट्रस्ट की अनेक योजनाओं के निर्माण और क्रियान्वयन में उनका योगदान महत्वपूर्ण था। कस्तूरबाग्राम में आयोजित बड़े राष्ट्रीय सम्मेलनों का संयोजन, राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री सहित विभिन्न राज्यों के वरिष्ठ अतिथियों की व्यवस्था और ग्राम-उन्नति संबंधी योजनाओं की प्रस्तुति में उनकी संगठनात्मक दक्षता बार-बार सामने आती थी। भवन-निर्माण के निर्णयों में उनकी व्यावहारिक दृष्टि और ग्राम-जीवन की बारीकियों पर उनकी पकड़ कस्तूरबा ग्राम की संरचना में आज भी प्रमाण की तरह उपस्थित है।

समय के साथ उनका सेवा-क्षेत्र और भी विस्तृत हुआ और वे दिल्ली स्थित हरिजन सेवक संघ में सचिव की भूमिका में आए। हरिजन चेतना, समरसता एवं सुधार कार्यक्रमों में उन्होंने अपनी संपूर्ण ऊर्जा समर्पित की। इसी दौरान घनश्याम दास बिड़ला के अमूल्य संग्रह 'बापू की प्रेम प्रसादी' के संपादन कार्य में सहयोग किया।

आज जब हम सार्वजनिक जीवन के दौरान माणकचंद कटारिया द्वारा लिखी दैनंदिनी डायरी को देखते है तो पाते है कि कोई साधारण व्यक्ति की निजी टिप्पणियाँ भर नहीं है, बल्कि स्वतंत्रता-संग्राम के दौर में एक सजग, संवेदनशील और चिंतनशील युवा मन की जीवंत दस्तावेज़ी गाथा है। उनके डायरी के पन्ने भारतीय इतिहास के उन दिनों के साक्षी है, जब राष्ट्र जाग रहा था, बदल रहा था और अपने भविष्य की खोज में संघर्षरत था।

उनकी डायरी का सबसे बड़ा मूल्य उनकी ईमानदार आत्मदृष्टि है। डायरी के पन्नों में कटारियाजी अपने भीतर की कमज़ोरियों, असफलताओं, संदेहों और द्वंद्वों को भी छिपाते नहीं है। वे बार-बार स्वयं से प्रश्न करते हैं हम आज़ाद हैं तो फिर इतना रक्तपात क्यों? यह प्रश्न केवल उस समय का नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी विचारणीय है। उनकी बेचैनी बताती है कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक घटना नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक जागरण भी है।

कटारियाजी की डायरी का एक और महत्त्वपूर्ण पक्ष है उनका सक्रिय सार्वजनिक जीवन। इलाहाबाद में सत्याग्रह, छात्र-आंदोलनों, पुलिस दमन, नेताओं से संवाद ये सब डायरी को इतिहास के दस्तावेज़ के रूप में विश्वसनीय बनाते हैं। 1943 और 1946 के प्रसंग विशेष रूप से दर्शाते हैं कि एक युवा स्वतंत्रता आंदोलन को केवल समाचार की तरह नहीं देख रहा था, बल्कि उसका हिस्सा था।

डायरी में कटारियाजी जैन दर्शन, महावीर के सिद्धांतों, और व्यावहारिक जीवन के बीच की दूरी पर तीव्र आत्ममंथन करते हैं 'यदि धर्म मनुष्य को आकार देता है, तो हम मंदिरों तक सीमित क्यों हों?' डायरी में उल्लिखित गांधीजी का 1946 का प्रसंग बताता है कि कटारियाजी के भीतर गांधी की करुणा, सत्य और विनम्रता के प्रति गहरा आकर्षण था।

लेखन कर्म की इसी श्रृंखला में महावीर जीवन में पुस्तक माणकचंद कटारिया की उस विशिष्ट लेख-शृंखला का संकलन है, जिसमें उन्होंने महावीर के अहिंसा धर्म, अनेकान्त, अपरिग्रह और सहअस्तित्व जैसे मूलभूत जैन सिद्धान्तों को केवल दार्शनिक अवधारणाओं के रूप में नहीं, बल्कि मानव-जीवन की व्यवहारिक आवश्यकताओं के रूप में समझाया है।

कटारिया जी के व्यक्तित्व को समझने में उनके समकालीनों के उद्गार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। 'मालवा के गांधी' के नाम से ख्यात काशीनाथ त्रिवेदी ने उनकी स्मृतियों को एक ऐसी अमर धरोहर बताया है जिसे न कोई चुरा सकता है, न मिटा सकता है। त्रिवेदी जी लिखते हैं कि उनकी मिठास, उनकी सरलता और मन को सुख देने वाली उनकी उपस्थिति आज भी आत्मिक आश्वासन देती है। बनवारीलाल चौधरी ने उन्हें मक्खन-सी मृदुल और फौलाद-सी दृढ़ता का अद्वितीय संगम कहा है। चौधरीजी का मानना था कि निर्भीकता उनका सहज स्वभाव था और विरोधी गुणों को साथ लेकर चल पाने की क्षमता उनके भीतर विलक्षण थी। लक्ष्मी एन. मेनन ने उन्हें श्यामलालजी के साथ इतना एकाकार पाया कि लोगों के लिए यह समझना कठिन हो जाता था कि किसकी पहचान कहाँ समाप्त होकर किससे जुड़ जाती है।

ये वर्ष माणकचंद कटारिया का जन्मशताब्दी वर्ष है। इस मौके पर जब हम उनके जीवन और कृतित्व को देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि सच्चा कार्य न कभी घोषणाओं में बसता है, न प्रशस्तियों में। वह अपने शांत प्रभाव, निर्मल दृष्टि और सतत कर्म के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाता है। कटारिया जी का समर्पण, उनकी नैतिक सहजता, उनका लेखन और उनका संगठन-कौशल इसी प्रकार की उजली परंपरा के हिस्से रहे हैं। उनका स्मरण केवल श्रद्धा का भाव नहीं, बल्कि प्रेरणा का आह्वान है उस रास्ते पर चलने का जिसे उन्होंने शांतिपूर्वक, धैर्यपूर्वक और पूरी निष्ठा से जिया।

एक और प्रेम कहानी जिसे दर्शक पसन्द करेंगे

फिल्म समीक्षा
आदित्य दुबे,
लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

बॉलीवुड में इस समय प्रेम कहानियों की बहार आई हुई है। 'सैयारा' की सुपर सफलता के बाद 'धड़क दो' , 'परम सुन्दरी' , सनी संस्कारी की 'तुलसी कुमारी' और 'एक दीवाने की दीवानियत' जैसी फिल्मों की लाइन लग गई है। इतना ही नहीं, इसके बाद प्यार का डबल डोज़ दो नई फिल्मों के साथ मिला –'गुस्ताख़ इश्क 'और आनन्द एल राय निर्देशित तेरे इश्क में।

जुनूनी आशिक़ी और मर-मिटने वाली मोहब्बत की दास्तान सुनाती -' तेरे इश्क में ' एक बार फिर आनन्द एल राय और धनुष की मजबूत जुगलबंदी को सामने लाती है। इस निर्देशक-एक्टर की जोड़ी का जादू दर्शक पहले ' राँझणा ' में देख चुके हैं, और इस बार भी वही जुनून बड़े परदे पर साफ झलकता है। लेखक हिमांशु शर्मा और नीरज यादव के लिखे - मैं प्यार में पड़ गया तो दिल्ली फूँक दूँगा डायलॉग सिनेमाघरों के फ्रण्ट बेंचर्स को काफी पसन्द आ रहे हैं।

फिल्म की कहानी का केंद्र में है , दिल्ली विश्वविद्यालय (डीएसयू) छात्र संघ के अध्यक्ष शंकर (धनुष) जिसकी अपनी दबंगई, गुस्सैल और हिंसक स्वभाव के कारण कॉलेज में हमेशा कोई न कोई नया काण्ड होता रहता है। उसी के कॉलेज में पढ़ने वाली मुक्ति बेनीवाली एक रिसर्च स्कॉलर है। समझदार और विचारशील । मुक्ति अपनी थीसिस के जरिए साबित करना चाहती है कि एक हिंसक इंसान के मूल स्वभाव को भी बदला जा सकता है। वह शंकर को अपनी थीसिस का सब्जेक्ट बनाकर उससे दोस्ती बढ़ाती है, मगर शंकर को उससे प्यार हो जाता है।

मुलाकातों के बढ़ते सिलसिले में शंकर का गुस्सा और हिंसा तो कम होने लगती है, मगर मुक्ति के प्रति उसका जुनून बढ़ता जाता है। मुक्ति का दिल जीतने के लिए वह न केवल खुद को बदलता है बल्कि कई इम्तिहानों से भी पार पाता है, मगर जब उसे पता चलता है कि मुक्ति उसे प्यार नहीं करती तो वह- ' दिल जला हूँ दुनिया जलाकर राख कर दूँगा ' के रवैये पर उतर आता है। सात साल बाद शंकर और मुक्ति की जिंदगी एक बार फिर करवट लेती है और दोनों को आमने-सामने कर देती है, मगर इस बार सिर्फ शंकर ही नहीं बल्कि मुक्ति भी उसके इश्क में दीवानी हो चुकी है।

धनुष का जबर्दस्त अभिनय इस फिल्म की सबसे बड़ी ताकत हैं। उनके चेहरे की भावनाएँ, आँखों का दर्द और गुस्सा .... हर दृष्य में असर छोड़ते हैं। कृति ने अपना काम ईमानदारी से निभाया है, हालांकि कई जगह धनुष के सामने उनका प्रभाव कम महसूस होता है। लेकिन सबसे बड़ा सरप्राइज पैकेज हैं मोहम्मद जीशान अय्यूब। छोटी भूमिका है, मगर दिल से जुड़ जाता है। उनका चरित्र सामने आते ही फिल्म की आत्मा को एक नया रंग देता है। जीशान और धनुष का एक सीन ऐसा है जो सीधे दिल में उतरता है। यह जोड़ी आपको 'रांझणा' की याद दिला देती है ,उनके बीच की समझ, डायलॉग्स की पकड़ और भावनाओं की गहराई फिल्म को एक अलग स्तर देती है। प्रकाश राज, धनुष के रोल में बेहतरीन एक्टिंग देकर फिल्म को मजबूती से संभालते हैं। उनका रोल छोटा मगर असरदार है।

संगीत की यदि बात करें और नाम ए आर रहमान का आये तो उम्मीदें अपने आप बढ़ जाती हैं। फिल्म में संगीत कहानी के साथ मेल खाता है, लेकिन गाने लम्बे समय तक याद रहने लायक नहीं है यह विस्मयजनक है । बैकग्राउण्ड संगीत अच्छा है और इमोशनल सीन को गहराई देता है।

अगर आपको जुनून से भर प्यार, दिल को छू लेने वाले भाव और कच्चे चरित्रों की सच्ची कहानी देखना पसन्द है, तो ' तेरे इश्क में ' जरूर देखी जा सकती है।

फिल्म में कमियाँ जरूर हैं, लेकिन धनुष का अभिनय इस कहानी को देखने लायक बना देता है। वो हर दृश्य में अपनी आँखों और हावभाव से ऐसा एहसास जगाते हैं, जिसे बोलकर नहीं, महसूस करके समझा जाता है। अगर आप पहले की फिल्म 'रांझणा' के चाहने वाले रहे हैं, तो यहाँ भी वही एहसास दोबारा जग सकता है। खासकर जब जीशान अय्यूब और धनुष एक साथ पर्दे पर आते हैं, तो उनकी समझ, डायलॉग और दोस्ती आपको बनारस की गलियों में ले जाती है। उनकी मौजूदगी छोटी है, लेकिन फिल्म की खूबी बन जाती है।

अधिकारियों की अनदेखी का शिकार हो रहा चंदोरा बांध

सिसकियाँ ले रही विश्व बैंक की सहायता से बनी चंदोरा सिंचाई परियोजना

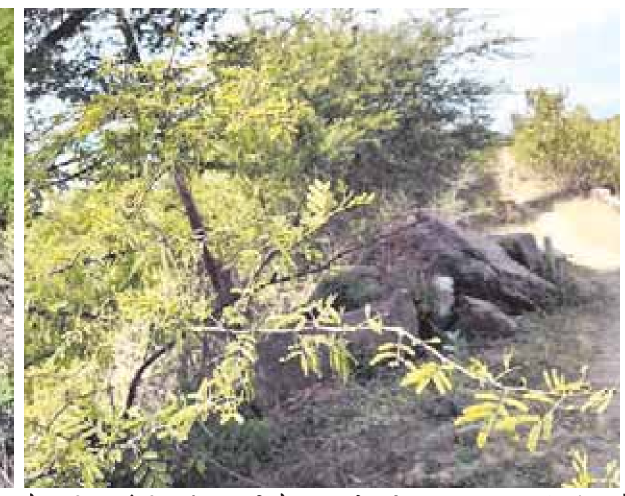

मुलताई/बैतूल। विश्व बैंक की सहायता से करोड़ों रुपये की लागत से बनी चंदोरा मध्यम सिंचाई परियोजना अधिकारियों की अनदेखी के चलते दिन-ब-दिन बद से बदतर होती जा रही है। एक समय किसानों के लिए वरदान माने जाने वाला चंदोरा बांध अब एक बार फिर अपने भविष्य को लेकर संकट में दिखाई दे रहा है।

जानकारों के अनुसार चंदोरा बांध के अप पोर्शन और डाउन पोर्शन में जगह-जगह पिचिंग धंस चुकी है। बांध के निचले हिस्से और टॉप लेवल पर बड़ी-बड़ी झाड़ियाँ उग आई हैं, जो अब पेड़ों का रूप ले रही हैं। इनकी जड़ों से बांध के मुख्य स्ट्रक्चर को नुकसान पहुँच रहा है। ऊपरी सतह की स्थिति इतनी खराब है कि वहाँ वाहन चलाना तो दूर, पैदल चलना भी कठिन हो गया है। जबकि टॉप लेवल को आपातकालीन मार्ग माना जाता है, जिसका रख-रखाव अत्यंत आवश्यक होता है। इसके बावजूद चंदोरा जैसे संवेदनशील बांध के टॉप लेवल की हालत बेहद दयनीय बनी हुई है। चंदोरा बांध की स्थिति, जहाँ लगातार बिगड़ती जा रही है, वहीं इससे जुड़ी नहरें भी जगह-जगह से टूट रही हैं और अपनी दिशा बदल रही हैं। नहरों में झाडियाँ उग आई हैं। सिंचाई विभाग द्वारा सफाई के नाम पर केवल औपचारिकताएँ निभाई जा रही हैं। परिणामस्वरूप क्षेत्र की यह महत्वाकांक्षी सिंचाई परियोजना और इसकी नहरें, आज अपनी बदहाली पर आँसू बहाती नजर आ रही हैं। क्षेत्र के किसानों का कहना है कि उन्होंने कई बार बांध की बिगड़ती स्थिति से अधिकारियों को अवगत कराया, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई।

31 जुलाई की सुबह याद कर आज भी सिहर उठते हैं किसान– 31 जुलाई 1991 की वह सुबह आज भी चंदोरा बांध क्षेत्र के किसानों को सिहरा देती है। उस दिन चंदोरा बांध का आरडी 610 से 840 के बीच का हिस्सा टूटकर बह गया था। तेज बहाव के कारण कई गाँव जलमग्न हो गए थे। इस जल-तांडव में अनेक मवेशियों की मौत हो गई थी और सैकड़ों एकड़ कृषि भूमि बंजर हो गई थी। फसलें पूरी तरह तबाह हो गई थीं। इस भीषण त्रासदी को किसान आज भी भूले नहीं हैं। इसके बावजूद शासन-प्रशासन ने कोई ठोस सबक नहीं लिया। चंदोरा बांध का निर्माण कार्य वर्ष 1984 में प्रारंभ हुआ था। बांध ढहने के बाद इसे सिंचाई योग्य बनाने के लिए सिंचाई वैज्ञानिक डॉ. थॉमस की सलाह पर कई सुधार कार्य किए गए और वर्ष 2005 में बांध को पूरी तरह भरा गया। निर्माण और सुधार की इस पूरी प्रक्रिया में 20 वर्षों से अधिक का समय लगा। आज 2025 तक, लगभग 40 वर्ष बीत जाने के बाद भी चंदोरा बांध का पानी नहर के अंतिम छोर (टेल) तक नहीं पहुँच पा रहा है।

किसानों के बजाय नदी में बह रहा है नहर का पानी– नहरों की सफाई के नाम पर सिंचाई विभाग हर वर्ष लाखों रुपये खर्च करता है, लेकिन यह राशि कहाँ और कैसे खर्च की जाती है, इसकी जमीनी हकीकत कहीं नजर नहीं आती। रख-रखाव के अभाव में चंदोरा बांध और उसकी नहरें बर्बादी की ओर बढ़ रही हैं। इसका सीधा नुकसान किसानों को हो रहा है, क्योंकि पानी खेतों तक पहुँचने के बजाय ताप्ती नदी में बह रहा है। किसानों ने उनका नाम न छापने की शर्त पर बताया कि अधिकारी शिकायत करने वालों को बाद में निशाना बनाते हैं। हकीकत यह है कि चंदोरा से बाड़े गाँव तक नहरों की सफाई के नाम पर औपचारिकता भी पूरी नहीं की गई है। जगह-जगह झाडियाँ उगी हैं, जिससे लाइनिंग के मुख्य निर्माण को नुकसान पहुँच रहा है। कुंडलिक बारस्कर के खेत के ऊपर नाले के पास नहर, कई स्थानों पर क्षतिग्रस्त हो चुकी है। कइयों जगहों पर ब्रांच नहरें बंद नहीं हो पाने के कारण पानी किसानों को मिलने के बजाय सीधे ताप्ती नदी में बह रहा है।

इनका कहना है –

चंदोरा जलाशय की लाइनिंग का कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाएगा। जलाशय की सफाई के लिए विस्तृत योजना बनाकर जल्दी ही कार्य शुरू किया जाएगा। वर्तमान में चंदोरा के अंतिम टेल क्षेत्र तक पानी नहीं पहुँच पा रहा है, इस समस्या का भी शीघ्र समाधान किया जाएगा।

– चंद्रशेखर देशमुख, विधायक, मुलताई विधानसभा

चंदोरा बांध के सुधार के लिए ड्रिप फेस-2 योजना के तहत 12 करोड़ 92 लाख रुपये का एस्टीमेट तैयार किया गया है। इसके अतिरिक्त ईआरएम योजना के अंतर्गत नहर लाइनिंग कार्य के लिए 18 करोड़ 42 लाख रुपये की योजना प्रस्तावित है। विभागीय प्रक्रिया पूर्ण होते ही सुधार कार्य प्रारंभ किया जाएगा।

– शिवकुमार नागले, प्रभारी एसडीओ, जल संसाधन विभाग, मुलताई

बर्थडे पार्टी में डांस करते वक्त विवाद 4 युवकों ने 2 दोस्तों को चाकू घोंपे, पेट फटने से एक की हालत गंभीर

बैतूल। कोतवाली थाना क्षेत्र के ग्राम कनारा डोमा ढाना में शुक्रवार रात जन्मदिन की पार्टी खुशियों की जगह चीख-पुकार में बदल गई। डीजे पर डांस करने को लेकर हुए मामूली विवाद में चार अज्ञात युवकों ने मिलकर दो दोस्तों पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। हमले में एक युवक की हालत बेहद नाजुक है, जिसे डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद भोपाल रेफर कर दिया है। घटना रात करीब 10.30 बजे की है। पार्टी में युवा नाच रहे थे, तभी किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई। विवाद

इतना बडा कि चार लडकों ने चाकू निकाल लिए। हमले में बोथी निवासी अर्जुन पिता गन्नू गंभीर रूप से घायल हो गया। उसके पेट और कंधे पर चाकू के गहरे घाव लगे हैं। खून ज्यादा बहने और हालत बिगडने पर उसे भोपाल रेफर किया गया है। चाकूबाजी में अर्जुन के साथी निलेश पिता बुद्धू निवासी बोथी को भी चोटें आई हैं। हमलावरों ने उसकी गर्दन और छाती पर वार किए। निलेश का इलाज जिला अस्पताल बैतूल में जारी है। घटना के बाद घबराए ग्रामीणों ने दोनों घायलों को तत्काल जिला अस्पताल पहुंचाया। सूचना मिलते ही खेड़ी चौकी प्रभारी राजेश सरियाम पुलिस बल के साथ अस्पताल पहुंचे और घायलों के बयान दर्ज किए। पुलिस ने देर रात ही आरोपियों की तलाश में टीमें रवाना कर दी हैं, हालांकि अभी तक हमलावरों की पहचान और गिरफ्तारी की पुष्टि नहीं हुई है।

कलेक्ट्रेट में मप्र सरकार की 2 वर्षीय उपलब्धियों पर केन्द्रित प्रदर्शनी

बैतूल। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने शनिवार को कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित मध्यप्रदेश सरकार के विकास और सेवा के दो वर्षों की उपलब्धियों पर आधारित केंद्रीत प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रदर्शनी में जिले में हुए औद्योगिक

विकास, आदि कर्मयोगी अभियान के उत्कृष्ट क्रियान्वयन, जल संचय में जनभागीदारी, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, राजस्व, रेशम, मत्स्य, जल जीवन मिशन, वन, सुशासन, ई-ऑफिस सहित विभिन्न विभागों की उपलब्धियों को आकर्षक और सुव्यवस्थित ढंग से प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, भैंसदेही विधायक महेंद्र सिंह चौहान, घोड़ाडोंगरी विधायक गंगाबाई उईके, मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे सहित बैतूल कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी तथा अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण भी उपस्थित रहे और उन्होंने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

जनजातीय बाहुल्य बैतूल जिले में अत्याधुनिक मेडिकल कॉलेज शीघ्र स्थापित होगा- प्रभारी मंत्री

बैतूल। राज्यमंत्री लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने प्रदेश सरकार के विकास और सेवा के दो वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शनिवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित पत्रकार वार्ता को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेश सरकार के दो वर्षों के कार्यकाल को जनसेवा, सुशासन और विकास को समर्पित बताते हुए सरकार की प्रमुख उपलब्धियों और योजनाओं की जानकारी मीडिया प्रतिनिधियों को दी। प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने कहा कि

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ने बीते दो वर्षों में गरीब, किसान, महिला, युवा और वंचित वर्ग के हित में अनेक जनकल्याणकारी निर्णय लिए हैं। जिले में स्वास्थ्य, उदयोग, शिक्षा, सडक़, जल आपूर्ति, आवास, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने कहा कि भारत सरकार द्वारा आदि कर्मयोगी अभियान में बैतूल जिले को बेस्ट परफार्मेंस जिले के रूप में चुना गया, जिसके लिए राष्ट्रपति द्वारा बैतूल कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी को सम्मानित किया गया। आदि कर्मयोगी अभियान के अंतर्गत धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कशर्ष अभियान के तहत शासन द्वारा संचालित समस्त योजनाओं में जनजातीय समुदाय को लाभान्वित करने एवं अधोसंरचना विकास के लिए जिले की 554 ग्रामों के समग्र विकास के लिए विलेज एक्सन प्लान तैयार किया गया। बैतूल जिले की सांस्कृतिक विरासत भरेवा कला है, जिसे राष्टीय पहचान प्राप्त हुई है। इस कला के शिल्पकार श्री बलदेव वाघमारे को राष्टपति द्वारा सम्मानित किया गया है। जनजातीय कार्य विभाग के अंतर्गत 05 सांदीपनि विद्यालय में 05 बालक एवं 05 कन्या छात्रावास स्वीकृत किए गए, जो 100-100 सीट के हैं जिनकी कुल लागत 40 करोड़ रुपए है।

प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गरीब वर्गीय परिवार के पक्के मकान का सपना पूरा करने के लिए शुरू किए प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी 1.0 बीएलसी घटक योजना के अंतर्गत स्वीकृत 4734 आवास के लक्ष्य के विरुद्ध 4566 आवास पूर्ण कराए गए है।

एम्स की लेडी डॉक्टर ने की खुदकुशी की कोशिश

ड्यूटी के बाद घर पर लगा लिया जहरीला इंजेक्शन; न सुसाइड नोट मिला, न कोई मैसेज

भोपाल (नप्र)। भोपाल एम्स के इमरजेंसी विभाग की डॉक्टर रश्मि वर्मा ने खुदकुशी की कोशिश की है। उन्होंने घर पर ही बेहोशी की दवा का इंजेक्शन लगा लिया। पति ने देखा तो तुरंत अस्पताल लेकर पहुंचे।

पल्स रेट और हार्टबीट लगातार गिरती देख साथी डॉक्टरों ने उन्हें तत्काल सीपीआर देकर रिवाइव किया। फिलहाल उनकी स्थिति क्रिटिकल बनी हुई है।डॉ. रश्मि वर्मा ने ऐसा क्यों किया, इसकी वजह फिलहाल स्पष्ट नहीं हो सकी है।

पति बोले- घर पर सब नॉर्मल था–साथी डॉक्टरों के मुताबिक, इमरजेंसी एंड ट्रॉमा विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. रश्मि वर्मा ने गुरुवार को अपनी ड्यूटी पूरी की। इसके बाद वे शाम को घर लौट गईं।

रश्मि के पति ऑर्थोपेडिक विशेषज्ञ डॉ. मनमोहन शाक्य रात करीब साढ़े 10 बजे उनको बेहोशी की हालत में लेकर एम्स आए थे। डॉ. शाक्य ने बताया कि घर पर सब नॉर्मल था। सब अपना-अपना काम कर रहे थे। वे डॉ. रश्मि के

पास पहुंचे तो वो बेहोश मिलीं।

72 घंटे बाद स्पष्ट हो पाएगी स्थिति–रश्मि का इलाज कर रहे डॉक्टरों ने कहा- वे जब तक एम्स पहुंची, करीब 25 मिनट हो चुके थे। इन 25 मिनट में उनके हार्ट ने काम करना लगभग बंद कर दिया था। वे रिकवर कर रही हैं, लेकिन नसों को कितना नुकसान पहुंचा है, यह स्थिति 72 घंटे बाद ही स्पष्ट हो सकेगी। फिलहाल वो मेन आईसीयू में वेंटिलेटर सपोर्ट पर हैं।

एम्स प्रबंधन का कहना है कि डॉ. रश्मि ने यह कदम क्यों उठाया, अभी यह क्लियर नहीं है। न कोई सुसाइड नोट मिला और न ही उनके किसी मैसेज की जानकारी अब तक सामने आई है।

नर्सिंग स्टाफ ने बताया- बुधवार को अचानक मैडम ने दो वायल लिए। पूछा तो उन्होंने कहा कि उनके रिलेटिव को लगना है। इसके बाद उन्होंने खुद को कैनुला लगवाया। इसे लगाने से पहले उनसे पूछा गया तो उन्होंने बताया कि उन्हें डायरिया हो रहा है इसलिए वे घर पर मेडिसिन ले लेंगी।

एम्स के नामी डॉक्टरों में शामिल–डॉ. रश्मि वर्मा ने एमबीबीएस की डिग्री प्रयागराज के एमएलएन मेडिकल कॉलेज से पूरी की है। बीआरडी मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर से जनरल मेडिसिन में एमडी किया है। डायबिटीज में सर्टिफिकेट कोर्स भी किया है। एम्स भोपाल में 3 वर्ष सीनियर रेजिडेंसी के अलावा एलएन मेडिकल कॉलेज, पीएमएस भोपाल जैसे संस्थानों में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में काम किया है। उन्हें टीचिंग का 5 साल का एक्सपीरियंस है।

फिलहाल वे मेडिकल एजुकेशन और आईसीएमआर रिसर्च में सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। बेसिक लाइफ सपोर्ट प्रोग्राम, नर्सिंग ट्रेनिंग सेशन में फैकल्टी इंचार्ज जैसी प्रशासनिक जिम्मेदारियां भी निभा रही हैं। प्रोफेशनल इंटरेस्ट में डायबिटीज, हाइपरटेंशन, मेटाबॉलिक सिंड्रोम, पेलिएटिव केयर, इमरजेंसी मेडिसिन और इमरजेंसी केयर इंटरवेंशन शामिल हैं।

साथी डॉक्टरों के मुताबिक, डॉ. रश्मि ने अब तक कई गरीब मरीजों के इलाज का खर्च उठाया है। वे ऐसे मरीजों को दूसरी संस्थाओं के जरिए मदद दिलाने का काम भी करती है।

स्वदेशी मेले में श्री ओम शक्ति टीवीएस ने की टीवीएस के दो नए मॉडलों की लांचिंग

बैतूल। पुलिस ग्राउंड में आयोजित स्वदेशी मेले में टीवीएस कम्पनी के दो नए मॉडलों की लांचिंग की गई। यह लांचिंग श्री ओम शक्ति टीवीएस गंज द्वारा की गई, जिसमें बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ एसबीआई कोठी बाजार के प्रबंधक प्रवीण कुमार के हस्ते रिबन काटकर किया गया। इस अवसर पर टीवीएस के नवीनतम इलेक्ट्रिक और पेट्रोल स्कूटर को पहली बार शहर के ग्राहकों के सामने प्रस्तुत किया गया।

स्वदेशी मेले में टीवीएस के ईवी ऑर्बिटर मॉडल को लॉन्च किया गया, जिसकी आईडीसी रेंज 158 किलोमीटर बताई गई है। यह

इलेक्ट्रिक स्कूटर 3.1 किलोवाट की क्षमता में उपलब्ध है और इसमें क्रूज कंट्रोल जैसे कई आधुनिक फीचर्स दिए गए हैं। कंपनी ने इसे खास तौर पर युवाओं की पसंद और आधुनिक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया है। इस इलेक्ट्रिक स्कूटर की एक्स शोरूम कीमत 1 लाख 04 हजार 200 रुपए रखी गई है, जिससे यह किफायती और आकर्षक विकल्प बनता है। इसके साथ ही टीवीएस एनटॉर्क 150 सीसी पेट्रोल स्कूटर की भी लांचिंग की गई। यह स्कूटर स्पोर्टी लुक में पेश किया गया है और इसे भारत का पहला हायपर स्कूटर बताया गया है। एनटॉर्क 150 सीसी स्कूटर में एलेक्सा सपोर्ट, स्मार्ट वॉच कनेक्टिविटी सहित कई आधुनिक फीचर्स दिए गए हैं। इस स्कूटर की एक्स शोरूम कीमत 1 लाख 09 हजार 400 रुपए तय की गई है। लांचिंग कार्यक्रम में श्री ओम शक्ति टीवीएस मोटर के संचालक दिनेश मस्की और राजेश मस्की मौजूद रहे। साथ ही एसबीआई कोठी बाजार के फील्ड ऑफिसर अंकित सिंह भी कार्यक्रम में शामिल हुए। स्वदेशी मेले में टीवीएस के इन नए मॉडलों को लेकर लोगों में खासा उत्साह देखने को मिला और बड़ी संख्या में ग्राहकों ने इनके फीचर्स और कीमत की जानकारी प्राप्त की।

ग्वालियर में मॉडिफाई साइलेंसर पर पुलिस की सख्ती

ग्वालियर। शहर में मॉडिफाई साइलेंसर लगी दो पहिया गाड़ियों से फैल रही तेज आवाज और दहशत पर अंकुश लगाने के लिए ग्वालियर पुलिस ने सख्त कार्रवाई शुरू कर दी है। इसी कड़ी में पुलिस ने शिंदे की छावनी इलाके में ऑटो पार्ट्स की आधा दर्जन दुकानों और गैराजों पर छापेमारी कर 62 मॉडिफाई साइलेंसर जब्त किए हैं।

पुलिस ने मौके से अवैध रूप से बेचे जा रहे और नियमों के खिलाफ इस्तेमाल होने वाले साइलेंसरों को जप्त कर संबंधित दुकानदारों के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की है। इसके साथ ही गैराज संचालकों को सख्त हिदायत दी गई है कि भविष्य में किसी भी वाहन में मॉडिफाई साइलेंसर न लगाया जाए, अन्यथा कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है कि बीते कई दिनों से ग्वालियर में मॉडिफाई साइलेंसर लगी गाड़ियों के कारण तेज आवाज, शोर-शराबा और आमजन में भय का माहौल बन रहा था। लगातार मिल रही शिकायतों के बाद पुलिस ने यह अभियान शुरू किया है। मॉडिफाई साइलेंसर मोटर व्हीकल एक्ट के तहत अवैध हैं। इनके कारण न केवल ध्वनि प्रदूषण बढ़ता है, बल्कि आमजन को भी परेशानी होती है। आगे भी इस तरह की कार्रवाई लगातार जारी रहेगी और नियम तोड़ने वालों पर सख्ती की जाएगी।

प्रदेश खुशहाली के रास्ते पर हुआ अग्रसर: नरेंद्र शिवाजी पटेल

विकास और सेवा के 2 वर्ष के अवसर पर आयोजित बैठक में प्रभारी मंत्री हुए शामिल

बैतूल। भाजपा को लगातार जनता का मिल रहा समर्थन स्पष्ट संदेश देता है कि मतदाता और जनता भाजपा पर पूरा भरोसा जताते हैं। मध्य प्रदेश की डॉ मोहन यादव सरकार के 2 साल पूरे होने पर भाजपा जिला कार्यालय विजय भवन में आयोजित विकास और सेवा के दो वर्ष की बैठक में जिले के प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल शामिल हुए,उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि प्रदेश की मोहन सरकार के यह दो वर्ष सौगातो से भरे हुए हैं। मात्र दो वर्षों में प्रदेश की मोहन सरकार द्वारा देश की नरेंद्र मोदी सरकार के साथ अद्भुत तालमेल और समन्वय के कारण प्रदेश आज खुशहाली के रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। इन मात्र 2 वर्षों में मोहन यादव सरकार द्वारा विकास को गति प्रदान की है, जो आगे भी जारी रहेगी। स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रदेश सरकार द्वारा अद्भुत कार्य किए गए हैं, जिससे बैतूल जिले को जल्द ही मेडिकल कॉलेज की सुविधा मिलने वाली है। इसके अलावा एयर एंबुलेंस से मरीजों को तत्काल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो सके, इसके लिए प्रदेश की सरकार द्वारा ऐतिहासिक कदम उठाया गया है। साथ ही युवाओं के लिए प्रदेश में नए उद्योग की स्थापना हो इसके लिए औद्योगिक घरानो को सुविधा प्रदान की जा रही है, ताकि हर युवा को उसकी

योग्यता के अनुरूप रोजगार मिले। जबकि कांग्रेस के शासनकाल में वे लोग केवल झूठी घोषणाओं के भरोसे चुनाव जीत जाते थे, जबकि इसके उलट भाजपा अपने द्वारा किए गए वादों पर खरा उतरती है और लगातार विकास कार्यों को अंजाम देकर बार-बार चुनाव में मतदाताओं का अभूतपूर्व समर्थन और आशीर्वाद हासिल करती है। प्रदेश की मोहन यादव सरकार द्वारा केंद्र की मोदी सरकार के साथ बेहतर समन्वय ही मध्य प्रदेश को अग्रणी राज्य बनाने में तेजी से कार्य कर रहा है, मतदाता पुनरीक्षण के विषय में बोलते हुए श्री पटेल ने कहा कि घुसपेठियो को मतदाता सूची से बाहर करने के लिए हर कार्यकर्ता को लगन और ईमानदारी से कार्य में लगना है, ताकि लोकतंत्र के पवित्र अनुष्ठान में वही मतदाता अपनी आहुति प्रदान कर सके जो की शुद्ध मतदाता है और भारतीय है।

जिनके दो जगह मतदाता सूची में नाम है उन्हें तत्काल हटवाये –सुधाकर पंवार– विकास और सेवा के दो वर्ष के विषय पर आयोजित बैठक में भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार ने मोहन यादव सरकार के कार्यकाल में प्रदेश सहित जिले को मिली उपलब्धियां पर विस्तार से प्रकाश डाला। मतदाता पुनरीक्षण कार्य के तहत भाजपा जिला अध्यक्ष श्री पवार ने बताया कि जो योग्य मतदाता है तो उन्हें जोडने पर ध्यान देने की जरूरत है, उन्होंने यह भी बताया कि जो मतदाता किसी अन्यत्र जगह पर चले गए हैं, उनके नाम मतदाता सूची में कैसे शामिल हो इसके लिए हर कार्यकर्ता को काम करने की जरूरत है। इसके अलावा ऐसे मतदाता जिनका की दो जगह नाम है, ऐसे मतदाताओ का एक ही जगह की मतदाता सूची में नाम हो इस कार्य को करने के लिए हर कार्यकर्ता को अपनी ओर से प्रयास करने होंगे तभी मतदाता सूची का शुद्धिकरण का कार्य हो सकेगा। बैठक को आमला विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे एवं मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने भी प्रकाश डाला। इस दौरान विधायक घोडाडोगरी गंगा उइके, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, एसआईआर के जिला प्रभारी कैलाश बंडू धोटे मंच पर मौजूद रहे। बैठक का संचालन भाजपा जिला महामंत्री कृष्णा गायकी ने किया एवं अंत में आभार प्रदर्शन जिला भाजपा महामंत्री महेंद्र सिंह चौहान द्वारा व्यक्त किया गया।

बिग बॉस कंटेस्टेंट की अमीरी के किस्से

भारतीय रियलिटी टीवी में लग्जरी फ्लेक्स आम है। लेकिन, तान्या मित्तल का केस अतिशयोक्ति का उदाहरण बन गया, जो छोटे शहरों की महत्वाकांक्षा दिखाता है। स्टाइलिश विवाद इंडस्ट्री की अनप्रोफेशनल प्रैक्टिस उजागर करता है, जहां छोटे वर्कर्स का शोषण होता है। यह सेलिब्रिटी बनने की होड़ में नैतिकता की कमी दर्शाता है। तान्या की जर्नी वायरल कंटेस्टेंट से विवादित सेलिब्रिटी तक पहुंची, जो बिग बॉस की सक्सेस फॉर्मूला को मजबूत करती है। ये घटनाएं बताती हैं कि शो के बाद की जिम्मेदारी उतनी ही जरूरी है जितना अंदर का ड्रामा।

बिग बॉस 19 की फाइनलिस्ट तान्या मित्तल ने शो के दौरान अपनी कथित अमीरी की कहानियों से सुर्खियां बटोरीं। लेकिन, बाहर आने के बाद स्टाइलिस्ट रिद्धिमा शर्मा के भुगतान विवाद ने उनकी छवि को और नुकसान पहुंचा दिया। यह विवाद रियलिटी शो की कंटेस्टेंट्स की विश्वसनीयता और सेलिब्रिटी कल्चर पर सवाल उठाता है। तान्या मित्तल ने बिग बॉस हाउस में दावा किया कि उनका घर 5-स्टार होटल से बेहतर है, जिसमें 2500 वर्ग फुट का सिर्फ कपड़ों का फ्लोर, हर मंजिल पर 5 नौकर और 7 ड्राइवर हैं। उन्होंने 150 बॉडीगार्ड्स और ग्वालियर में करोड़ों की फैमिली बिजनेस की बातें की, जो सोशल मीडिया पर वायरल हुई और ट्रोलिंग का शिकार बनीं।

ग्वालियर के लोकल्स ने इन दावों को खारिज किया। कहा कि उनका परिवार स्मॉल-टाउन अमीर है घर, दुकानें और जमीनें हैं, लेकिन अंबानी स्तर की नहीं। फाइनल के बाद स्टाइलिस्ट रिद्धिमा शर्मा ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया कि उन्होंने एक हफ्ते के लिए महंगी साड़ी-लहंगा भेजे, लेकिन पेमेंट नहीं मिला और कपड़े भी वापस नहीं हुए। उन्होंने तान्या की टीम पर धमकी का आरोप लगाया। यह पोस्ट बाद में डिलीट कर दी गई, लेकिन स्क्रीन शॉट वायरल हो गए। बाहर के अन्य विवाद तान्या पर ग्वालियर में दो एफआईआर केस दर्ज हैं। एक फ्रॉड का, जहां इन्फ्लुएंसर फैजान अंसारी ने धोखाधड़ी, एक्स-बॉयफ्रेंड बलराज को फंसाने और फर्जी लग्जरी लाइफ का आरोप लगाया। दूसरा पोटाश गन इस्तेमाल का। उनके भाई अमृतेश पर थ्रेट्स के केस भी हैं।

शो के बाद उन्होंने भोजपुरी फिल्मों की एक्ट्रेस और बिग बॉस कंटेस्टेंट नीलम गिरी को फेक कहने पर अनफॉलो किया। तान्या की रील्स वायरल हुईं, लेकिन फेक रिच गर्ल टैग ने उन्हें ट्रोल किया। क्लासिस्ट कमेंट्स जैसे हाउस हेल्पर से तौलिया इस्त्री करवाना और उनसे चप्पल पहनना सोशल मीडिया पर आलोचना का कारण बने। फिर भी, एकता कपूर ने उन्हें अपकमिंग प्रोजेक्ट ऑफर किया। बिग बॉस 19 के घर में रहने के दौरान तान्या मित्तल अक्सर अपनी साड़ियों को

लेकर सुर्खियों में रहीं। उन्होंने बार-बार दावा किया कि सलमान खान के शो में वह करीब 800 साड़ियां लेकर आई थीं और वह अपने आउटफिट्स को रिपीट नहीं करतीं।

बिग बॉस 19 की कंटेस्टेंट तान्या मित्तल अपनी बातों को लेकर जितनी ज्यादा चर्चे में रहती हैं, उतनी ही वो मुश्किलों में भी फंस गई। एक बार फिर कुछ ऐसा ही हुआ है। तान्या पर उनकी स्टाइलिश रिद्धिमा शर्मा ने पेमेंट न करने का आरोप लगाया। हाल ही में रिद्धिमा शर्मा ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक लंबा नोट लिखकर तान्या मित्तल पर पेमेंट न करने का आरोप लगाया। उन्होंने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि तान्या मित्तल की टीम उन्हें बेवकूफ समझ रही है। उन्होंने आगे कहा कि उनके पास इस बात के सारे सबूत हैं कि वह तान्या मित्तल को साड़ियां भेजती रही हैं और उन्होंने उनकी टीम से जल्द से जल्द उनका बकाया चुकाने की अपील की।

रिद्धिमा ने लिखा, मैंने हमेशा तान्या मित्तल का सपोर्ट किया है। दर्शक जानते हैं कि मैं ही उनकी स्टाइलिंग करती हूं। उन्होंने मुझसे बात तक नहीं की है और फोन पर यह कहने के बावजूद कि उन्हें आउटफिट बहुत पसंद आया, मुझे अभी तक उनकी तरफ से कोई जवाब नहीं मिला है। मैंने उन्हें एक तोहफा और एक लेटर भी भेजा, लेकिन थैंक्यू तक नहीं। मैं आउटफिट भेज रही हूं, पोर्टर का खर्च भी दे रही हूं और अब टीम मुझसे कह रही है कि अगर साड़ी आज नहीं पहुंची, तो मुझे मेरी फीस बिल्कुल नहीं मिलेगी। मैं इतने लंबे समय से मेहनत कर रही हूं, क्या मैं बेवकूफ हूं? वाह! ब्रांड्स को अभी तक रिटर्न नहीं मिले हैं और मैं पूरे एक हफ्ते से फॉलोअप करते-करते थक गई हूं। मैं तान्या की टीम से अनुरोध करती हूं कि कृपया मेरे पैसे दे दें।

अगले साल सनी की 5 फ़िल्में परदे पर

साल 2026 में सनी देओल का जलवा पूरे उफान पर रहने वाला है। उनकी 5 फिल्में रिलीज होने जा रही हैं। किसी में वे देशभक्त बनें तो किसी में वीर हनुमान। गदर-2 के हिट होने के बाद सनी देओल फिर से बॉक्स ऑफिस पर गरजने लगे हैं। एक दौर था जब सनी की फिल्मों का सिलसिला धीमा पड़ चुका था। बड़े प्रोजेक्ट मिलना मुश्किल हो गया था और वे ज्यादातर अपने होम प्रोडक्शन की फिल्मों में ही नजर आते थे। लेकिन, अब स्थिति पूरी तरह बदल गई। सनी देओल न सिर्फ बॉक्स ऑफिस पर दोबारा धमाका कर चुके हैं। बल्कि आने वाले सालों के लिए उनके पास फिल्मों की लंबी लाइन लगी है। अकेले 2026 में उनकी पांच बड़ी फिल्में रिलीज होने जा रही हैं।

बॉर्डर-2 (22 जनवरी) को आएगी। यानी साल की शुरुआत धमाकेदार होगी। बॉर्डर-2 एक वॉर ड्रामा फिल्म है. इसका डायरेक्शन अनुराग सिंह ने किया है। फिल्म में सनी देओल के साथ वरुण धवन, दिलजीत दोसांझ, अहान शेट्टी, सोनम बाजवा और मेधा राणा जैसे सितारे नजर आएंगे। गबरू 13 मार्च को आएगी। सनी की दूसरी फिल्म गबरू एक ड्रामा मूवी है, जिसका डायरेक्शन शशांक उदापुरकर कर रहे हैं। इसमें सनी के साथ सिमरन, प्रीत कमानी, दर्शन जरीवाला और निशु दीक्षित जैसे कलाकार दिखाई देंगे।

लाहौर-1947 की रिलीज तारीख तय नहीं है। राजकुमार संतोषी के निर्देशन में बनी ये पीरियड ड्रामा फिल्म आमिर खान प्रोडक्शंस ने बनाई है। इसमें सनी देओल के साथ प्रिटी जिंटा, शबाना आजमी, करण देओल, अली फजल और अभिमन्यु सिंह नजर आएंगे। ये कहानी 1947 के दौर की पृष्ठभूमि पर बेस्ड है।

इक्का भी एक धमाकेदार एक्शन फिल्म मानी जा रही है, जिसकी शूटिंग फिलहाल मुंबई में चल रही है। फिल्म के डायरेक्टर सिद्धार्थ पी मल्होत्रा हैं। सनी देओल के साथ अक्षय खन्ना और संजीदा शेख इस फिल्म में अहम किरदार निभाएंगे। रामायणम पार्ट 1 यह फिल्म 8 नवंबर (संभावित) को रिलीज होगी। नितेश तिवारी की इस मेगा बजट फिल्म में रणबीर कपूर राम, साई पल्लवी सीता और यश रावण के किरदार में नजर आएंगे। सनी देओल इस फिल्म में हनुमान का दमदार रोल निभा रहे हैं।

रियल बॉक्स

सितारे भी नहीं बचे दूसरी शादी के दर्द से

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्म के कलाकारों का जीवन आम लोगों से अलग नहीं होता। वे परदे पर कैसी भी भूमिका निभाएं, पर असल जीवन में उनकी खुशी और गम सबके जैसे होते हैं। उनका पारिवारिक जीवन, उसके दर्द और संबंधों में आपसी खींचतान फ़िल्मी कथानकों से अलग होती हैं। वैसे तो फिल्मों के अंत में सारी समस्याएं सुलझ जाती है, पर असल जीवन में ऐसा नहीं होता। जब जीवन उत्तरार्ध की तरफ बढ़ता है, तो उसकी असलियत की परतें खुलने लगती है। क्योंकि, ऐसे में पति-पत्नी के रिश्ते काफी अहम होते हैं। लेकिन, जब लोकप्रियता के शिखर पर किसी कलाकार की रिश्तों की नौका डगमगाती है और वह दूसरी शादी कर लेता है, तो हालात बदल जाते हैं। ये स्थितियां कभी अनुकूल होती है, कभी विपरीत। किंतु, दूसरी शादी से परिवार जिस तरह की मानसिकता से गुजरता है, उन हालात को संभालना आसान नहीं होता। ऐसे में सारा सच घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहता और निकलकर बाहर आ जाता है। धर्मेंद्र के जीवन के अंतिम दिनों में जो कुछ घटा, उसने इस सच्चाई को बेहतर ढंग से सामने ला दिया।

कलाकारों के जीवन की जटिलताएं कम नहीं होती। ये उनकी फिल्मों के क्लाइमैक्स की तरह सुखद नहीं होता। इन अभिनेताओं की दो शादियों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश और उनके निधन के समय साथ देने के भावनात्मक हालात के कई किस्से हैं। ऐसी स्थितियों ने इन रिश्तों की जरूरत और मजबूरियों को भी उजागर किया, जहां दूसरी पत्नियों ने जीवन भर साथ दिया लेकिन अंतिम समय में वे अकेले या विवादित रहे। धर्मेंद्र के निधन के बाद हेमा मालिनी के साथ जो हुआ वो किसी से छुपा नहीं है। धर्मेंद्र के जीवन के अंतिम दिन बेहद पीड़ादायक रहे। उनके निधन की अफवाह उड़ी, फिर उन्हें अस्पताल से घर लाया गया, उसके बाद इस महान अभिनेता का निधन हो गया। दूसरी पत्नी हेमा मालिनी को धर्मेंद्र की प्रार्थना सभा में भी नहीं आने देना जैसे किस्से आम हुए। धर्मेंद्र की पहली पत्नी प्रकाश कौर ने भी उनका जीवन भर साथ दिया और अंतिम समय में भी परिवार में उनका सम्मान बना रहा। पर, ये पहला और आखिरी प्रसंग नहीं है। दो शादी करने वाले कई अभिनेता हैं, जिन्होंने अच्छे हालात में पहली पत्नी के होते हुए शादी तो की, पर बाद के हालात अनुकूल नहीं रहे, तो वे उससे बचते रहे। कई नामचीन फिल्मी हस्तियों ने दो शादियां की। दूसरी पत्नियों ने जीवन भर साथ दिया। लेकिन, अधिकांश के अंतिम समय में पारिवारिक स्थितियां उलझ गई और उन्हें कटु अनुभवों से गुजरना पड़ा।

फ़िल्मी दुनिया के कई अभिनेताओं ने दो शादियां कीं, जहां दूसरी पत्नी उनके अंतिम समय में साथ न होने की वजह से जीवन की विडंबना उजागर हुई। दिलीप कुमार ने 1966 में अपने से उम्र में काफी छोटी, खूबसूरत अभिनेत्री सायरा बानो से निकाह किया। ये रिश्ता हिंदी फिल्म इतिहास के सबसे चर्चित वैवाहिक रिश्तों में से एक माना गया। सायरा बानो के साथ उनका वैवाहिक जीवन लंबे समय तक स्थिर और भावनात्मक रूप से गहरा रहा, लेकिन संतान न होने की कसक अक्सर चर्चा में रही। इसी पृष्ठभूमि में 1981 के आसपास उनकी ज़िंदगी में आसमा रहमान नाम की महिला आई, जिससे उन्होंने चुपचाप दूसरी शादी कर ली। आम धारणा यह बनी कि संतान की चाहत और भावनात्मक असुरक्षा ने उन्हें इस कदम के लिए प्रेरित किया। कुछ ही वर्षों में यह रिश्ता टूट गया। दिलीप कुमार ने अपनी आत्मकथा में अस्मा रहमान से दूसरी शादी को गंभीर भूल बताया था। वे फिर सायरा के पास लौट आए। दूसरी शादी दिलीप कुमार की छवि पर एक धब्बे की तरह दर्ज हुई, परंतु सायरा बानो के अटूट साथ और उनकी चुप्पी ने इस प्रकरण को धीरे-धीरे स्मृति के हाशिये पर पहुंचा दिया। उनकी अभिनय-प्रतिभा, सामाजिक प्रतिष्ठा और उम्र के अंतिम चरण का गरिमामय व्यक्तित्व इस निजी भूल पर भारी पड़ा। लेकिन, सायरा बानो को समर्पित जीवनसाथी के रूप में ही याद किया जाता है।

राज बब्बर ने भी स्मिता पाटिल से दूसरी शादी की थी। राज बब्बर ने 1975 में नादिरा बब्बर से शादी की, जिनसे दो बच्चे हुए। फिर 1983 में स्मिता पाटिल को पत्नी बनाया।

स्मिता ने 1986 में बेटे प्रतीक को जन्म दिया, लेकिन प्रसव की जटिलताओं की वजह से 31 साल की उम्र में वे चल बसीं। स्मिता की मृत्यु के बाद राज पहली पत्नी नादिरा के पास लौट आए, जिसने उन्हें स्वीकार भी किया। इसी तरह राजेश खन्ना के वैवाहिक जीवन में भी अड़चनें रही। उन्होंने डिंपल कपाड़िया से शादी की, लेकिन बाद में वे अलग हो गए, पर तलाक नहीं हुआ। उनकी दूसरी पत्नी के बारे में कई खुलासे हुए। अनीता आडवाणी ने दावा किया कि उन्होंने राजेश खन्ना से चुपके शादी की थी। अनीता उनके अंतिम समय तक उनके साथ रहीं। राजेश खन्ना के जीवन में दूसरी शादी और संबंधों ने बहुत विवाद और रहस्यमयता पैदा की, जिसने इस बड़े अभिनेता को अंतिम समय में उनके चाहने वालों से दूर कर दिया।

एक और अभिनेता विनोद खन्ना भी थे, जिन्होंने भी दो शादियां कीं। उनके जीवन के उतार-चढाव से हर कोई वाकिफ है। उनकी पहली पत्नी गीतांजलि थी और दूसरी कविता दफ्तरी से। दोनों अपनी-अपनी जगह पर विनोद खन्ना के जीवन का हिस्सा बनी। जब विनोद खन्ना का निधन हुआ, तो दोनों पत्नियां उनके अंतिम संस्कार में मौजूद थीं, मतलब यह नहीं कि दोनों ने आपस में समझौता कर लिया था। ओशो के प्रति गहरे आध्यात्मिक झुकाव ने उन्हें परिवार और फिल्म, दोनों से दूर कर दिया जो तलाक की वजह बना। अध्यात्म से लौटने और करियर में वापसी के बाद उनकी मुलाकात उद्योगपति सरयू दफ्तरी की बेटी कविता दफ्तरी से हुई। दो शादी करने वाले बड़े फ़िल्म कलाकारों में आमिर खान और सैफ अली खान भी हैं। आमिर ने पहली शादी रीना दत्ता से 1986 में और दूसरी किरण राव से 2005 में की। 16 साल बाद 2002 में तलाक हो गया, लेकिन दोनों आज भी परिवार के रूप में जुड़े हैं। आमिर का दोनों पत्नियों से आपसी सहमति से तलाक भी हो गया। इसी तरह सैफ अली खान ने भी दो शादियां की। पहली 1991 में अभिनेत्री अमृता सिंह से हुई। 2004 में दोनों का तलाक हो गया। सैफ ने दूसरी शादी 2012 में अभिनेत्री करीना कपूर से की, जिससे उनके दो बेटे तैमूर और जहांगीर हैं। ऋतिक रोशन भी ऐसे अभिनेता हैं, जिन्होंने दो बच्चों के जन्म के बाद सुजैन से तलाक लिया, पर उनकी दूसरी शादी को लेकर असमंजस है।

शादियों के मामले में संजय दत्त सबसे अलग ही रहे। संजय दत्त की पहली शादी रिचा शर्मा से 1987 में हुई, जिनकी 1996 में ब्रेन ट्यूमर से मृत्यु हो गई। दूसरी रिया पिल्लई से (1998-2008, तलाक), तीसरी मान्यता से (2008 से चली आ रही)। रिचा की मृत्यु के समय वे युवा थे, उनकी बेटी त्रिशाला की परवरिश अमेरिका में हुई। संजय दत्त के जीवन में भी उनका परिवार और पत्नियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहीं। इसी तरह किशोर कुमार वे गायक और अभिनेता थे, जिन्होंने चार शादियां की। रुमा गुहा ठाकुरता (1950-58), मधुबाला (1960-69), योगिता बाली (1976-78), और लीना चंदावरकर (1980) से। उनकी दूसरी शादी मधुबाला से हुई, जो 1969 में बीमारी से चल बसी। लीना चंदावरकर विवाह के समय वे गर्भवती थीं और 1987 में किशोर को दिल का दौरा पड़ने तक लीना उनके साथ रहीं।

इन घटनाओं से स्पष्ट है कि फिल्मों के सफल और लोकप्रिय अभिनेता भी निजी असुरक्षाओं, इच्छाओं और भावनात्मक खालीपन से अछूते नहीं रहते। फर्क सिर्फ यह है कि जहां दिलीप कुमार की दूसरी शादी क्षणिक और त्रासद प्रकरण बनकर रह गई, वहीं धर्मेंद्र और विनोद खन्ना की दूसरी शादी उनके जीवन के उत्तरार्ध की स्थिरता और संतुलन का महत्वपूर्ण अध्याय बनी। राजेश खन्ना की दूसरी शादी दबी-छुपी जरूर रही, पर रिश्तों की रिसन को बाहर आने से रोका नहीं जा सका। जबकि, राज बब्बर, विनोद खन्ना, आमिर खान और सैफ अली की दूसरी शादी अलग तरह के हालात से उपजी घटना रही। अभिनेता अक्सर दूसरी शादी के कारण पारिवारिक और सामाजिक दर्द झेलते हैं। वहीं पहली पत्नी को अपमान और विश्वासघात का सामना करना पड़ता है। इन कहानियों से फिल्मी सितारों के निजी जीवन की जटिलताएं झलकती है, जहां प्रेम, अलगाव और अकेलापन अंतिम क्षणों को काला कर देते हैं। इससे लगता है कि वैवाहिक जीवन में स्थिरता कितनी दुर्लभ है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

दो जिस्म एक जान थे राज कपूर और शैलेन्द्र

अशोक जोशी

हिन्दी सिनेमा की त्रिमूर्ति दिलीप कुमार, राज कपूर और देव आनंद की छवियां एक दूसरे से अलग थी। दिलीप यदि ठेठ देसी नायक थे और देव आनंद शहरी छैला तो राज कपूर एक ऐसा सीधा साधा इंसान को पर्दे

पर उतारते थे जो दिल की बात दिल वालों से एकदम सहज अंदाज में कहकर बाजी मार लेता था। राज कपूर की इस छवि को पर्दे पर स्थापित करने में उनका सहज अंदाज, भोलाभाला अंदाज तो था ही लेकिन उनके गीतों ने उन्हें सीधी सी बात न मिर्च मसाला के साथ पेश कर स्थापित किया था। इन गीतों को गढने में उनके स्थायी गीतकार शैलेन्द्र को बहुत बड़ा हाथ था।

यदि यह कहा जाए कि राज कपूर और शैलेन्द्र एक दूसरे की बात जानते और मानते थे तो कुछ गलत नहीं होगा। राज कपूर अपने दर्शकों से जो कहना चाहते थे ,उसे शैलेन्द्र बखूबी समझते थे और उसे उसी अंदाज में कलमबद्ध करते थे जैसा कि राज कपूर या पर्दे पर उनका पात्र सोचता था। इस जोड़ी का केवल यहीं तक संबंध नहीं था। यह कुदरत का करिश्मा या संयोग ही था कि चौदह दिसम्बर वह तारीख थी जिसने इन दोनो का संबंध जोडा भी है और तोडा भी है। 14 दिसम्बर को जन्मे राज कपूर वह शख्स हैं जिन्होंने सबसे पहले शैलेन्द्र को अपनी फिल्मों से जोडा और शैलेन्द्र वह शख्स हैं जिन्होने 14 दिसम्बर को इस दुनिया से रुखसत होकर सबसे पहले इस मधुर संबंध को तोड़ा है।

फिल्मों में आने से पहले शैलेन्द्र की हालत ठीक वैसी ही थी जैसी मुफलिस कवियों की होती है। वे भुखमरी में भी जीवन यापन कर लेते हैं, लेकिन पैसों की खातिर कोई समझौता नहीं करते। मंचों पर तल्ख कविता करने वाले शैलेन्द्र साम्यवादी सोच के मालिक थे और राजकपूर भी कम्युनिस्ट विचारधारा के समर्थक थे। एक कवि सम्मेलन में राज कपूर ने उन्हें सुना और फिल्मों में काम करने का प्रस्ताव रखा जिसे शैलेन्द्र ने अस्वीकार कर दिया। इसके बाद बात आयी गयी हो गई । एक समय ऐसा भी आया जब शैलेन्द्र की पत्नी अस्पताल में थी और उनके पास पैसे नहीं थे। तब मजबूर में ही सही राज कपूर का प्रस्ताव याद आया।

उन दिनों राज कपूर आग की असफलता के बाद रामानंद सागर की कहानी पर बरसात के निर्माण में संलग्न थे। इस फिल्म से उन्होने शंकर जयकिशन के साथ अपनी नई जोड़ी बनाई थी। हसरत पहले से ही उनकी टीम में थे जो ज्यादातर गाने लिख चुके थे। उसी दौरान शैलेन्द्र ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार करने की बात सामने रखी। राज कपूर पेशोपेश में पड़ गए कि ज्यादातर गीत लिखे जा चुके थे। फिर भी उन्होने कुछ नई सिचुएशन निकाली और शैलेन्द्र को काम देकर उन्हें आर्थिक संकट से बाहर निकाल लिया।

बरसात में शैलेन्द्र के हिस्से दो गीत आए। पतली कमर है और टाइटल सांग बरसात में हमसे मिले तुम। यह दोनों गाने बहुत ज्यादा हिट हुए और शैलेन्द्र पहली ही फिल्म से फिल्म जगत में स्थापित हो गए । वैसे तो शैलेन्द्र की जोड़ी राजकपूर और शंकर जयकिशन के साथ ही सबसे ज्यादा जमती थी। एसडी बर्मन और सलिल चौधरी के साथ

भी उन्होने उतनी ही सफलता के साथ काम किया। फिल्म मधुमति में उनके सारे गाने जबरदस्त हिट हुए और उस साल उन्हें फिल्म फेयर अवार्ड भी मिला।

शैलेन्द्र आशु कवि थे। उनकी इस प्रतिभा को उजागर करते हुए आरडी बर्मन ने बताया था कि एक बार फिल्म काला पानी के लिए एक सिचुएशन के लिए उन्हे गाना लिखना था और उन्हें मुखडा सूझ नहीं रहा था। वह चले गए। लेकिन बर्मन दादा ने उनका पीछा नहीं छोडा। उन्होने आरडी बर्मन को बुलाकर कहा कि जहां कहीं शैलेन्द्र मिले गीत लेकर आना। बहुत कोशिश के बाद मालाबार हिल की पहाडी पर शैलेन्द्र उन्हे मिल गए । उसी समय आसमान पर चांद निकल आया था। पंचम ने बोला शैलेन्द्र जी दादा ने भेजा है उन्होने धुन बना दी है आपको केवल अभी मुखडा लिखना है। मैं मुखडा लिए बिना घर नहीं लौट सकता ।

शैलेन्द्र ने आसमान में खिले चांद की तरफ देखते हुए पंचम को माचिस की डिब्बी पकडा कर धुन बताने को कहा। पंचम ने माचिस की डिबिया बजाते हुए धुन सुनाई और शैलेन्द्र ने सिगरेट का पैकेट फाड़कर उस पर लिखा- खोया खोया चांद खुला आसमान आंखों में सारी रात जाएगी, तुमको भी कैसे नींद आएगी। सिगरेट का पैकेट पंचम को पकड़ा कर कहा जाओ दादा को दे दो और अंतरे मैं सुबह दे दूंगा। उनका लिखा यह गीत आज भी हिट है। शैलेंद्र ने सीधे और सरल शब्दों के साथ प्रेम और भावुकता के गहरे गीत लिख हिंदी गीतों को एक नई राह दी थी। यही कारण था कि उन्हें आधुनिक युग का तुलसीदास भी कहा जाता था। शैलेंद्र ने सबसे ज्यादा और सबसे लोकप्रिय गीत शंकर जयकिशन के लिए लिखे। शायद इसीलिए यह संयोग जुडा की महज़ 41 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कहने वाले जयकिशन के जाते ही शैलेन्द्र भी सिर्फ 43 साल की उम्र में दुनिया को छोड कर चले गए।

राज कपूर ने शैलेंद्र के निधन के बाद कहा था, ÷मेरे दोस्त ने जाने के लिए कौन सा दिन चुना, किसी का जन्म, किसी का मरण। कवि था न, इस बात को खूब समझता था। हालांकि, उनकी मौत के इतने साल बाद भी उनके गाने लोगों के दिलों में बसते हैं। उनके गीत सिर्फ फिल्मी दुनिया तक सीमित नहीं थे, बल्कि वो आवाम के हक की बात करते हैं, जुल्म से लड़ने की बात करते हैं, व्यवस्था के प्रति गुस्सा दिखाते हैं और जिंदगी जीतने का हुनर भी बताते हैं। वे एक समावेशी कवि थे, जिन्होंने करीब हर भाव के गाने लिखे, जो आम इंसान के जीवन से जुड़े हैं।

खास हो गईं... बातें 'आम' की !

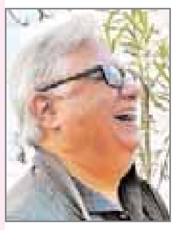

प्रकाश पुरोहित

बचपन में आम का मतलब छोटे-छोटे चूसने वाले आम से ही होता था। कतर के खाने वाले कलमी आम होते थे, जो स्वाद में कच्ची अरण-ककड़ी जैसे स्वाद में होते थे। तब सेर के हिसाब से ठेले पर आम बिकते थे या फिर छबड़ी भर होते थे, जिसमें तादाद या वजन का अंदाज लगाया जाता था और खरीदी-बिक्री होती थी। आमतौर पर तो आम चूसे ही जाते थे, लेकिन जिन घरों में शकर होती थी, वहां आम-रस भी कभी-कभार बन जाया करता था। ये ही दिन थे, जब गुड़ की चाय, गरीबी की पहचान थी और शकर तक पहुंचना रसूख वालों के ही हिस्से में था। राशन की दुकान से तय वजन की शकर मिलती थी, जिसके लिए कूपन बनता था और परिवार के नाम दर्ज होते थे। तब गरीब-गुरबे शकर की कमाई से आम खरीदना पसंद करते थे कि शकर

वाजपेयी की तरह ओवर रेटेड है, इससे बेहतर तो दशहरी और लंगड़ा होता है !

कलमी आम यदि ज्यादा बेस्वाद यानी फीका होता था, तो उसका साग भी बन जाया करता था, मगर उनके लेवाल कम थे कि जो मजा आम चूसने में है, कतर के खाने में कहां। उस समय अक्षय कुमार ने नरेंद्र मोदी से सवाल किया होता तो ये नहीं पूछते कि आम कैसे खाते हैं... चूस कर या काट कर। यह जरूर पूछते कि एक बैठक में कितने आम चूस लेते थे। चेप लगा या नहीं, आम चूसते हुए! 'इंसान के हाथ की बनाई नहीं खाते, हम आम के मौसम में मिठाई नहीं खाते' ये शायर मुनव्वर राना का कहना है। कहते हैं जिसने मां का दूध पीया है, आम चूसकर ही खायेगा, काट कर नहीं (सोपान जोशी की किताब मेंगिफेरा इंडिका से)।

जिनके यहां आम के पेड़ होते थे, नजदीक के रिश्तेदार, दोस्तों या परिचित को आम-रस-पूड़ी खाने की दावत देते थे और फिर दो-तीन दिन दमणी (छोटी बैलगाड़ी) मेजबान के घर के बाहर ही खुली पड़ी रहती थी कि बैलों को भी तो आराम चाहिए। मजेदार बात यह याद आती है कि 'जी भर के आम चूस लीजिए।' लेकिन रास्ते या घर के लिए आम की टोकरी नहीं रखी जाती

ब्लैक में बिकती थी और गरीब तो गुड़ की चाय पीते-पिलाते थे।

तब एक-दो आम से काम नहीं चलता था। बाल्टी या बड़ी तगारी में पानी भर कर, उसमें आम डाल दिए जाते थे, ठंडे होने के लिए। फिर पूरा परिवार, गोला या घेरा बना कर उसके आसपास बैठ जाता था और दनादन आम चूसे जाते थे। बच्चों और बूढ़ों के लिए आम गिलबिला के दिए जाते थे, जिसमें आम के मुंह से थोड़ा-सा रस बाहर टपकाया जाता था कि चूसने वाले को चेप ना लगे। आम खाए जा रहे हैं, यह मुंह पर लगे चेप को देख कर अंदाजा लगाया जाता था और दवा के नाम पर 'आज से आम खाना बंद' निषेधाज्ञा जारी होती और कपूर-खोपरे का घालमेल मुंह यानी ओंठ के आसपास चुपड़ा जाता था। दुःसाहसी तो चेप वाले मुंह से भी आम खाने से मुंह नहीं चुराते थे।

यह कोई नहीं पूछता था कि कौन-सा आम खाया... हां, यह सवाल आम रहता था कि कितने आम खाए। सामने पड़ी गुठलियों के ढेर से अंदाजा लगा लिया जाता था। आम अवेरने की परंपरा नहीं थी कि जितने आते थे, कम ही पड़ते थे। एक बैठक में सौ-पचास आम चूस कर फेंक देने वाले आमतौर पर पाए जाते थे। आम की पाल, घर में लगाने वाले भी होते थे, लेकिन हर एक के बस की बात नहीं होती थी कि उसके लिए घर के आम पेड़ जरूरी होते थे। भारत से पाकिस्तान, चीन, अमेरिका को जिस तरह आम की भेंट जाती है ना, वैसे ही आम की पाल खुलने पर परिचित-रिश्तेदार और दोस्तों के यहां आम भेजने का रिवाज था।

चेहरे पर मूंछ फूटने तक तो यह पता ही नहीं था कि आम की किस्में भी होती हैं। वैसे, उस समय तक जाति और धर्म का भी पता नहीं होता था। सभी एक जैसे लगते थे, फिर महमूद हो या मांगीलाल या मनजीत। सच कह रहा हूं, हापुस या अलफांसो का तो तब तक कर्ण-प्रवेश भी नहीं हुआ था। इस तरह का कोई आम कहीं होता है, नहीं मालूम था। वैसे ये हापुस जो है ना, मनोज

थी... कि जानते थे घर पहुंचने तक तो चूसने नहीं, फेंकने लायक ही रह जाएंगे। तब पूरा शरीर जैसे आम की तरह महकता रहता था। यह भी रिवाज था कि अपनों के लिए खास आम और 'परजा' यानी कामकाज वालों के लिए आम, आम के पेड़ होते थेः लेकिन रहते सभी चूसने वाले थे !

वेस्ट इंडीज के एंटीगा में आम के पेड़ गिन नहीं सकते... और आम की ऐसी दुर्दशा कभी देखी नहीं कि रास्ते भर गिरे-पड़े रहते थे और कोई उठाने वाला नहीं। गिरमिटिया मजदूर अपने साथ आम ले गए थे और अब वहां आम की बहार है। सड़कों पर आम बिकते नहीं देखे कि हर घर में तो आम के कई-कई पेड़ हैं, कोई कितना चूसे। वहां भी सिर्फ चूसने वाले आम ही होते हैं। वहां बेड-मैंगो का बहुत मजा लिया था कि बेड-टी का कोई इंतजाम नहीं था। आम से पौ फटती थी और आम से ही रात ढलना शुरू होती थी। पुराने वक्त के गांव का मजा आ रहा था एंटीगा में।

ये आम-बातें आज इसलिए याद आ गईं कि दो दिन पहले ही खबर आई कि महाराष्ट्र और गुजरात में हापुस पर रार मची है। महाराष्ट्र का दावा है कि हापुस यानी अलफांसो हमारा है और गुजरात पैदा कर रहा है। भारत का साठ फीसद आम उत्तरप्रदेश से आता है, दशहरी, लंगड़ा, चौसा, बदाम और भी न जाने कौन-कौन से। हापुस तो सिर्फ दस फीसद है, कि बीस फीसद तो दक्षिण भारत से आता है। बाकी पर झगड़ा इसलिए नहीं है कि ये विदेश नहीं जाते हैं, जबकि भारत से हर साल करीब तीस हजार मीट्रिक टन हापुस आम, विदेशियों के मुंह में जाते हैं और भारत को दस करोड़ डॉलर (रुपए में जिसे करना हो, कर ले) की विदेशी मुद्रा मिलती है। आम का यह झगड़ा, बिरयानी जैसा नहीं है... यहां तो कमाई में हिस्सेदारी का डर है, जो महाराष्ट्र को होना ही है कि हापुस यानी महाराष्ट्र !

बिना स्त्री के पुरूष की ज़िंदगी

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

उम्र के इस पड़ाव पर मैं अगर स्त्री होकर ये बात कहूँ कि हम खाना ना बनाये, या हम देखभाल ना करें, इनसे तो हमारे बिन कुछ नहीं होता, पाजामें में नाड़ा नहीं डाल सकते, पुरूषों के दिल का रास्ता उनके पेट से होकर गुजरता है तो आज के युग में हम स्त्रियों को ऐसा कहना छोड़ देना चाहिये। हमारे 60-70 की आयु वाले पुरूष अभी हो सकता है अपवाद हो पर खाना बनाने में पुरूष ने महारथ हासिल की है। अब पत्नी के अच्छे जॉब के चलते पुरूष को 'हाऊस हज़्बैंड' (घर संभालने वाला पति) या स्त्री को 'होममेकर' (घर संभालने वाली पत्नी) बनने में कोई गुरेज नहीं है। अब इलास्टिक वाले लोअर से काम चलाने वाले मर्दों को पायजामें में नाड़ा डलवाने का कांसेप्ट नहीं चाहिए पर क्या वाकई इन्हीं लॉजिक के चलते बिना स्त्री पुरूष एक दूसरे से जुड़े थे? ये सब भौतिक बातें हैं क्यों शादी संस्थायें अब भी चल रही हैं।

प्रेम की बातें होती हैं, किताबें लिखी जा रही हैं, नज़्में कविताएं, गज़लें कही जा रही हैं, फिर वो क्या है जो स्त्री पुरूष को अब लंबे समय तक नहीं बांधे रख पा रहा है? वो है बाज़ारवाद। अब हर काम के लिए विकल्प मौजूद है। सेक्स के लिए आपको शादी ही करने पड़े ज़रूरी नहीं, 'लिव इन' जैसे संबंध भी हैं जहां बंधने की बाध्यता नहीं। वैसे भी पुरूष बंधने से ज़्यादा डरता है। आज की स्त्री एक स्तर के बाद परिवार, बच्चे, स्वीकार कर बंध जाती है पर अब माहौल ऐसा हो गया है कि अब रिश्ते को बांधने के लिये परिवार, स्त्री, पति पत्नी बच्चों की आवश्यकता नहीं रही। ये कुछ कुछ पाश्चात्य रहन-सहन सा है (सब रिश्ते ऐसे हो ज़रूरी नहीं युवा पीढ़ी में ही अपवाद है उन्हें बंध कर रहना अच्छा लगता है)। चलिये तो क्या बिना स्त्री के पुरूष की ज़िंदगी नीरस सी है अगर हम बाज़ार में मिलने वाले स्त्री विकल्पों को भी हटा दे मान लें पुरूष के जीवन में कोई स्त्री ना हो तो? माँ, बहन, बीवी, दोस्त, प्रेमिका सब रिश्तों से मुक्त पुरूष खुश है (मैं संन्यासी की बात नहीं कर

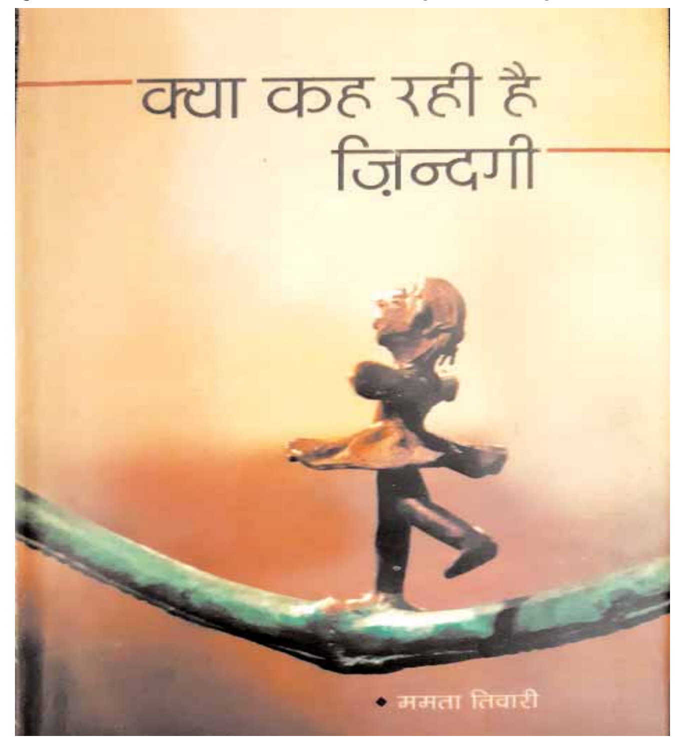

रही) भौतिक समाज में अकेले पुरूषों की बात कर रही हूँ। ये अकेलापन पुरूष के जीवन में बचपन से तो नहीं आता (आखिर पुरूष स्त्री की कोख से पैदा हुये हैं) अर्थात् आपने अपने जीवन में कभी ना कभी स्त्री का साथ भोगा है। मेरी कई पुरूष दोस्तों से बात हुई। कुछ ने मज़ाक में कहा कि वाह, बिना स्त्री के जीना कितना अच्छा। ना कपड़े जगह पर रखना, ना स्त्री बॉस को सहना, ना माँ की डांट खाना।

फिर भी पुरूष स्त्री के बिना रह नहीं पा रहा है। ना सही शादी, प्रेम टूटने पर दूसरे रिश्ते ढूंढता है। क्या अकेलापन पुरूष को ज़्यादा ख़लता है? ये जो यू-ट्यूब, व्हाट्स-अप पर स्त्री का मख़ौल उड़ाते वीडियो, जोक्स आ रहे हैं ये पुरूष की असुरक्षा है क्या? पुरूष शायद अब स्त्री के बदलते बागी तेवर (ऐसा वो मानते हैं मैं इसे ग्रोथ मानती हूँ) स्वीकार करने से डर रहा है तो क्या कोई भावनात्मक, संवेदनात्मक रिश्ता नहीं उनके बीच? विदेश में रहने वाले हिंदुस्तानी दो बच्चों के सफल पिता अपनी सफलता का क्रेडिट अपनी माँ और पत्नी को देते हैं (स्त्री निराश ना हो हमारे भिन्न रूपों में हमें पुरूष अब भी सराहता है)। वहीं शादी व प्रेम के बाद चोट खाये, मनीमांइडेड बीवी और गर्लफ्रेंड के चलते 35 वर्षीय एक साफ्टवेयर इंजीनियर अब दूसरे रिश्ते में आने को तैयार नहीं है। यहाँ तक कि स्त्री पात्र उनके रंगमंच पर पधारे नहीं। मेरे पूछने पर 'सुशील' कहते हैं अब जीवन में स्त्री की आवश्यकता नहीं। शारीरिक ज़रूरतों के लिये आपकी उम्र अभी शेष है? पूछने पर वो बोले जी भर गया। हमारे पुरूष दोस्तों में ही कोई करीबी दोस्त स्त्री सुलभ चरित्र का होता है (सॉरी गे नहीं)। हमें अब शारीरिक नहीं मानसिक साथ के लिये स्त्री के चरित्र वाला ये दोस्त पसंद है। जो हम सबके काम करता है। दुःखी होने पर कंधा देता है। सलाह देता है। (ये युवाओं की पसंद थी)।

वहीं 36 वर्षीय 'राजन' और 70 वर्षीय 'वीरेन' अपनी स्त्री को अकेलेपन का साथी, अच्छी सलाहकार, मददगार, मैनेजर मानते हैं। उनके बिना पुरूषों की ज़िंदगी अस्त व्यस्त हो जायेगी। मेरे अपने रिश्तेदार जिनकी पत्नी उनकी बेकदरी इस कदर करती हैं कोई दूसरा होता साथ छोड़ देता वे कहते हैं मुझे लगता है उसकी (पत्नी) कोई मानसिक समस्या है और मुझे उसका साथ देना चाहिये। मि. नारंग पारंपरिक वाक्य कहते हैं, स्त्री पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं। तो कुल मिलाकर बात यूँ है कि 'हम तुम्हारे साथ रह नहीं पाते, पर हम तेरे बगैर जी भी नहीं पाते।' पुरूष के असुरक्षित, उसके मां के अभाव की पूर्ति करती अच्छी सलाहकार (पर अहं के कारण उसकी सलाह उसके सामने नहीं मानते) उसे लकी चार्म मानते हैं पर स्वीकार नहीं करना चाहते। खोजते रहिये, इन बातों पर निर्णय पर पहुँचना कठिन है। सो इस बार निर्णय आप पे छोड़ा। तब तक आपस में पूछते रहिये और क्या कह रही है ज़िंदगी?

चलते-चलते- घबराइये मत अगली बार का विषय है 'बिना पुरूष के स्त्री की ज़िंदगी?'

अरावली के अस्तित्व पर पुनर्विचार दरकार

मुद्दा

प्रो. अस्मिता सिंह

लेखक प्राध्यापक हैं।

लगभग तीन अरब वर्ष पुरानी विश्व की सबसे प्राचीन पर्वतमाला, जिसे पहाड़ों का पितामह भी कहते है आज अपनी पहचान और अस्तित्व के सबसे गंभीर संकट से जूझ रही है। ये भी संभव है कि हमारी आने वाली पीढ़ी अरावली को देख भी न पाए क्योंकि हाल ही में सुप्रीम कोर्ट द्वारा अरावली की एक समान वैज्ञानिक परिभाषा स्वीकार की गई, जिसमें किसी पहाड़ी को अरावली तभी माना जाएगा जब उसकी ऊँचाई स्थानीय भू-परिस्थिति से कम से कम 100 मीटर अधिक हो। यह परिभाषा सुनने में सरल लगती है, पर इसकी वैज्ञानिकता और पर्यावरणीय तर्क पर गंभीर सवाल उठते हैं। सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या प्राचीन अवशिष्ट पर्वत जिसकी आकृति सहस्त्राब्दियों में क्षरण से बनी है और जिसकी ऊँचाई पूरे विस्तार में समान है ही नहीं उसे एक ही पैमाने से परिभाषित किया जा सकता है?

दरअसल गुजरात से लेकर दिल्ली तक अरावली एक निर्बाध भू-श्रृंखला के रूप में है। कहीं ये ऊँचे शिखरों के रूप में तो कहीं छोटी झाड़ीदार पहाड़ियों या रिज़ के रूप में दिखती है। जयपुर और अलवर जैसे जिले, जो उत्तरी अरावली के अंतर्गत आते हैं, वहाँ अरावली की ऊँचाई न्यूनतम पाई जाती है, जबकि दक्षिणी अरावली क्षेत्र विशेष रूप से सिरोही और उदयपुर इस पर्वतमाला का सबसे ऊँचा और सघन भाग है। यहीं पर गुरु शिखर जैसी ऊँची चोटियाँ स्थित हैं, और उदयपुर क्षेत्र में अरावली की सर्वाधिक चोटियाँ पाई जाती हैं। वहीं अजमेर मध्य अरावली का वह क्षेत्र है जो काफी कम ऊँचाई वाला भू-भाग माना जाता है पर यह अरावली की सतत संरचना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जो ऊँचाई आज कम मानी जा रही है, वही ऊँचाई स्थानीय जलवायु, वर्षा और हवा की दिशा नियंत्रित करती है। यही छोटे-छोटे टीले धूल-आंधियों को रोकते हैं, नमी संरक्षण करते हैं और नाजुक वन-परिस्थितियों को बनाए रखते हैं।

100 मीटर का मानक इस पूरी भू-श्रृंखला को कुछ चुनिंदा पहाड़ियों तक सीमित कर देता है और लगभग 90 प्रतिशत से अधिक अरावली की पहड़िया संरक्षण-परिधि से बाहर हो जाती हैं। अरावली पर्वतमाला उत्तरङ्कपश्चिम भारत की एक अद्वितीय ग्रीन बैरियर के रूप में कार्य करती है। एक ऐसी प्राकृतिक ढाल, जिसने सदियों से थार के रेगिस्तान को दिल्लीङ्कएनसीआर, हरियाणा और गंगा के उपजाऊ मैदानों की ओर बढ़ने से रोका है। यह पर्वतमाला हवा की दिशा और गति को नियंत्रित कर धूल-भरी आँधियों को थाम लेती है और अपने घने वनस्पति आवरण के माध्यम से प्रदूषकों का अवशोषण कर प्राकृतिक एयर-प्यूरीफायर की तरह काम करती है। दिल्ली की निरंतर बढ़ती आबादी, औद्योगीकरण और यातायात से उत्पन्न वायु प्रदूषण में जहाँ हर व्यक्ति को पर्याप्त शुद्ध हवा नहीं मिल पा रही, वहाँ अरावली एक निरंतर ऑक्सीजन-निर्माता तंत्र के रूप में काम करती है अरावली पर्वतमाला का प्रभाव उत्तर-पश्चिम भारत की जलवायु पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मानसून के समय यह पर्वत श्रृंखला एक अवरोधक बनकर मानसूनी बादलों की दिशा को मोड़ती है, जिससे वे शिमला और नैनीताल की ओर बढ़ते हैं और उप-हिमालयी नदियों तथा उत्तर भारतीय मैदानों को जल प्रदान करते हैं।

वहीं सर्दियों में यह मध्य एशिया से आने वाली ठंडी पश्चिमी हवाओं से उपजाऊ जलोढ़ क्षेत्रों की रक्षा करती है। इन पहाड़ों से लूणी, बनास और साबरमती जैसी अनेक नदियाँ और नदीङ्कउपशाखाएँ निकलती हैं, जो राजस्थान और गुजरात क्षेत्र की जलङ्कसंचयन, हजारों गाँवों की कृषि और पेयजल की आपूर्ति कर ग्रामीण पारिस्थितिकी को जीवंत बनाए रखती हैं। लेकिन खनन गतिविधि के कारण अब ये जीवनदायिनी नदियां भी सूखने लगी है। इन नदियों का अस्तित्व सीधेङ्कसीधे अरावली पर्वतमाला के स्वास्थ्य पर ही निर्भर है। इतना ही नहीं अरावली पर्वतमाला एक अत्यंत समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र की धुरी भी है। इसकी गोद में सरिस्का टाइगर रिज़र्व के साथ ही अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्यों का विस्तार है, जो इसकी जैवङ्कविविधता और पर्यावरणीय महत्ता को सिद्ध करते हैं। राजस्थान में माउंट आबू वन्यजीव अभयारण्य और कुंभलगढ़ अभयारण्य तथा दिल्लीङ्कहरियाणा के अरावली जैवङ्कविविधता पार्क इस पर्वत श्रृंखला की संरक्षणङ्कपरंपरा को आगे बढ़ाते हैं। ये क्षेत्र वन्यजीवों के सुरक्षित गलियारों भी सुनिश्चित करते हैं, जिससे प्रजातियों की आनुवंशिक विविधता बनी रहती है। अरावली के वन कार्बनङ्कभंडारण में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ये दिल्ली सहित पूरे उत्तरी क्षेत्र के लिए 'फेफड़ों' की तरह काम करते हैं, वायु गुणवत्ता को संतुलित रखते हैं और स्थानीय तापमान को नियंत्रित कर इस समूचे क्षेत्र की जलवायु को संतुलित रखते है।

चिंता की बात है कि राजस्थान और हरियाणा में देश के कुल वन क्षेत्र का बहुत कम हिस्सा ही मौजूद है। चूँकि इन राज्यों के अधिकांश वन क्षेत्र इसी पर्वत श्रृंखला में स्थित हैं ऐसी स्थिति में अरावली इन राज्य के लिए जीवनरेखा के समान है। लेकिन दुखद स्थिति यह है कि इतनी समृद्धि होने पर ये पर्वतमाला लगातार दशकों से अवैध खनन माफियाओं और रियल एस्टेट व्यापारियों के द्वारा नष्ट की जा रही हैं। व्यापारियों के लिए महत्वपूर्ण है इन पहाड़ियों की खदाने और उसके खनिज। इसी खनिज की लालसा के कारण ये पहाड़ियाँ लंबे समय से अनियंत्रित खनन गतिविधियों का गंभीर संकट झेल रही है न्यायालय के अनेकों आदेश के बावजूद भी अवैध खनन बदस्तूर जारी है।

सर्वोच्च न्यायालय के 100 मीटर या उससे अधिक ऊँचाई वाली पहाड़ियों को ही अरावली मानने की परिभाषा को स्वीकार किया जाना अरावली के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। इससे खनन माफियाओं को नए रास्ते मिलेंगे और उन क्षेत्रों में भी खनन की अनुमति माँगी जा सकती है, जो अभी तक प्राकृतिक संरक्षण क्षेत्रों के दायरे में आते थे। अब निचली पहाड़ियों पर खनन और निर्माण कार्य आसान हो जाएगा जिससे अरावली पूरी तरह खोखली होकर नष्ट हो जाएगी साथ ही नष्ट होगी इस क्षेत्र की जलवायु, जैव-विविधता और पारिस्थितिकी। आवश्यक है कि सुप्रीम कोर्ट इस ड्राफ्ट की पुनः समीक्षा कर आदेश पर पुनर्विचार करें ताकि इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को बचाया जा सकें।

मुस्कान के पीछे... तबाही की दास्तान !

❒ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

सबसे पहली बात, मैंने 'धुरंधर' नहीं देखी है इसलिए यहां बात फिल्म की नहीं है, लेकिन उसके बाद जो बवाल खड़ा हो गया है उसकी बात है। फिल्म अच्छी है या खराब, किसे अच्छी लगी या नहीं, ये बातें अपने-अपने फिल्म देखने के नजरिये पर तय होती हैं। पच्चीस साल पहले फिल्म आई थी 'क्या कहना' प्रीति जिंटा और सैफ अली खान की। जब फिल्म देखकर घर लौटी और पूछा गया कि कैसी लगी? जवाब था कि अच्छी नहीं लगी। बहुत ज़्यादा ड्रामा है, तब कुछ और फिल्मों की बात हुई कि इनमें से कौन-सी अच्छी लगी या खराब और आखिरकार यह तय पाया गया कि अगर फिल्म मुझे पसंद आ रही है, इसका मतलब पैसा नहीं कमाएगी और जिन्हें मैं खराब या बुरी फिल्म कह रही हूं वो कमाऊ और जनता की पसंद साबित होगी।

धीरे धीरे यह साबित होता गया कि भारत का ही नहीं बल्कि कहीं का भी हो, मेनस्ट्रीम सिनेमा या पॉपुलर फिल्में, जो कमाऊ-पूत होती हैं मुझे कम ही पसंद आती हैं, लेकिन क्या इसका मतलब है कि मुझे अपनी बात कहने का कोई हक नहीं है?

किसी भी बात को जब हम दोनों तरफ देखने और सुनने और समझने की काबिलियत पैदा कर पाते हैं, तब ही हम बेहतर जान पाते हैं। तो बात शुरू हुई थी 'धुरंधर' से कि कुछ लोगों को बहुत अच्छी लगी, लेकिन कुछ लोग खास तौर से कुछ क्रिटिक हैं जिन्हें यह फिल्म पसंद नहीं आयी, रिव्यू ने हंगामा कर दिया। अनुपमा चोपड़ा रिव्यू के वीडियो को बहुत बुरा कहा गया और उस वीडियो को अब यू-ट्यूब से हटा लिया है। इस वीडियो में अनुपमा ने फिल्म में कलाकारों की तारीफ की है। सिनेमैटोग्राफी और संगीत को भी सराहा है, लेकिन फिल्म की पॉलिटिक्स और फिल्म की लम्बाई से खुश नहीं थीं और फिल्म झेलने जैसा बताया। बस इस बात पर

अनुपमा पर ट्रोल आर्मी ने हल्ला बोल दिया।लम्बे समय से फिल्म रिव्यू की दुनिया में मजबूत आवाज और मौजूदगी को यूं चुप करा दिया। वैसे सारेगामा और हॉलीवुड रिपोर्टर के एक ही मैनेजमेंट के अंडर होने से बिजनेस के धागों की भी उलझन हुई और नतीजा यह निकला कि इतने

वजह चाहे ट्रोल्स हों या बिजनेस, लेकिन अफसोस यही है कि मैनेजमेंट और अनुपमा को इन हालात में कोई और रास्ता नहीं सूझा। अनुपमा की फिल्म के बारे राय का वीडियो हटा कर तो खत्म नहीं किया जा सकता है। ऋत्विक रोशन ने ट्वीट में जी भर कर तारीफ की, लेकिन उसके नीचे लिखा बस मैं इस फिल्म की पॉलिटिक्स से सहमत नहीं हूं और उन्हें भी अपनी यह लाइन हटानी पड़ी। सुचारिता अमेरिका में रहती हैं और रिव्यू करती हैं उन्हें भी गालियां दी जा रही हैं, लेकिन इंडिपेंडेंट मीडिया है, इसलिए उनका वीडियो अभी भी मौजूद है। वीडियो में क्या कहा गया इस बात से फिल्म देखने वालों को कम ही फर्क पड़ता है। अनुपमा ने पायल कपाड़िया की फिल्म की इतनी तारीफ की तो क्या उस फिल्म देखने भीड़ उमड़ पड़ी थी या नीरज घेवान की फिल्म 'होमबाउंड' ब्लॉक बस्टर हो गयी? ये बातें इसलिए मायने रखती हैं कि जब भी ऐसी आवाजों को बिना विरोध के, ख़ामोशी से दब जाने दिया जाएगा। फिर ऐसा वक्त ऐसा आएगा कि हम अपनी आवाज ही खो बैठेंगे। दुष्यंत कुमार ने लिखा है 'बोल के लब आजाद हैं, तेरे बोल जुबान अब तक तेरी है।'

उम्मीद करते हैं कि अनुपमा अपनी आवाज को यूं दबने न देंगी और हॉलीवुड रिपोर्टर के यू-ट्यूब चैनल के झंडे तले नहीं तो खुद के चैनल पर अपनी आवाज और अपनी रिव्यु को बरकरार रखेंगी और नए लोगों को भी हौसला मिलेगा कि फिल्म को खराब कहना कोई जुर्म नहीं है। रही बात उन ताकतों की जो फिल्म को बुरा कह देने से भी घबरा जाते हैं तो और भी ज्यादा जरूरी हो जाता है कि अपनी आवाज बुलंद कर उनकी घबराहट बढ़ाई जाए।